गौ.नं १८

श्री

जुगल बिनोद बिलास

श्री प्रोनी जी

श्री साकेतविहारी शरणागतौनौ

❁ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❁

❁ श्री रसिकजनप्राणवल्लभाय नमः ❁

श्रीयुगलविनोद विलास



रचयिता

रसाचार्य रसिकाधिराज, पूज्यपाद, अनन्त श्री विभूषित

स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज



प्रकाशक

स्वामी श्रीरामकिशोरशरणजी महाराज,

श्रीहनुमन्निवास (कोठे पर)

श्रीअयोध्याजी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्ध
२	६	सुप पान	सुष षान
२८	२१	चाक	चौक
३८	७	लस्व	ह्रस्व
४१	३	विदोद	विनोद
५२	८	सुचित	सुचित्त
५३	१५	नाहं	नहिं
७४	१४	अनमाल	अनमोल
८६	५	तारन	तोरन
१००	२०	प्रमाद	प्रमोद
१०१	३	अलेष	अलेप
१०६	६	कलित	कलिल
३४	१२	समन	सुमन



❁ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❁

❁ श्री रसिकजनप्राणवल्लभाय नमः ❁

श्रीयुगल विनोद विलास



रचयिता

रसाचार्य रसिकाधिराज, पूज्यपाद, अनन्त श्री विभूषित

स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज

———

प्रकाशक

द्वितीय संस्करण ५००

स्वामी श्रीरामकिशोर शरणजीमहाराज,

श्रीहनुमन्निवास (कोठे पर)

श्रीअयोध्याजी

❀ श्रीसीतारामजी ❀

❀ श्री रसिकजनप्राणवल्लभाय नमः ❀

नम्रनिवेदन

आदरणीय पाठक वृन्द की सेवा में प्रार्थना है कि यह ग्रंथ रत्न रसवन्त सन्तोंका जीवन धन है। जिन बड़भागी चेतनपर युगल सरकार की अहेतुकी कृपा होती है वे ही इस दिव्यलीला में प्रवेश कर पाते हैं। अतः, भावपूर्ण इसका सेवन अत्यावश्यक है। इतना ही नहीं, अनधिकारी जनों के हस्तगत न हो यह ध्यान रखा जावे। यह ग्रंथ श्रीयुगल सरकार का वाङ्मय स्वरूप है। जिस प्रकार श्री सरकार की अर्चापूजा स्वयं सावधानी से यथा समय की जाती है अथवा योग्य व्यक्ति द्वारा कराई जाती है वैसे ही आपसे यह प्रार्थना है कि आप स्वयं भावपूर्ण हृदय से इसका सेवन करें और अपने पश्चात् ऐसा प्रबंध करें कि यह ग्रंथ हो या और इस प्रकार के अन्य रसमय ग्रंथ पैतृक सम्पत्ति न समझी जाकर रसिक भक्तों को ही प्राप्त हों।

श्री अयोध्याजी
सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला जन्म-
दिवस; २०१४ वि०

प्रार्थी—
लक्ष्मण शरण
छोटा मंदिर, श्रीहनुमन्निवास

मुद्रकः—श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी।

प्रथम संस्करण की

❋ भूमिका ❋

विदितवेदितव्य महानुभावों को यह विदित है कि वेदान्त वेद्य परतत्त्व की प्राप्ति करना ही मानव मात्र का परम पुरुषार्थ है, "तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय" "तंत्वोपनिषदं पृच्छामः" "पुरुषान्न परंकिञ्चित् सा काष्ठा सा परागतिः" इत्यादि वेदवाक्य परब्रह्म पुरुषोत्तम को ही परम प्राप्य प्रतिपादन करते हैं। प्राणिमात्र अनन्त रस चाहता है, अनन्त सुख चाहता है। वेद कहता है कि अनन्त रसस्वरूप तो परमात्मा ही है उसी को पाकर जीवात्मा परमानन्द से युक्त होता है, यथा—"रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति। (तै० ७।) सत्-चित्-आनन्द रूप ब्रह्म की प्राप्ति के लिए क्रमशः कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग हैं, किन्तु आनन्द की अनुभूति तो केवल भक्ति से ही सम्भव है। श्रुति स्मृति वाक्यों से स्पष्ट है, यथा— यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः' 'भक्त्या मामभिजानाति', 'भक्त्याहमेकयाग्राह्यः' इत्यादि। भक्तिरस की पूर्ण अभिव्यक्ति मधुर रस में ही है यह भी शास्त्र-सिद्ध है। साहित्यकारों की भी यही सम्मति है कि रस शब्द की मुख्य-वृत्ति श्रृङ्गार में ही है। वीर, करुण आदि में तो औपचारिक (गौण) है। रस शब्दस्तु श्रृङ्गारे मुख्यवृत्तितया स्थितः।"

अथवा यह कह सकते हैं कि मधुररसामृत सागर में अन्य रस विलीन रहते हैं इसीलिये मधुररस को प्राचीन एवं अर्वाचीन महापुरुषों ने रसराज कहा है।

अपरिगणितकन्दर्पदर्पदलनपटीयान्, सौन्दर्य-माधुर्य सुधा सागर, श्रीजानकीवल्लभजी की मधुररसोपासना में कतिपय

सज्जनों को विप्रतिपत्ति है वे समाहित होकर वेदावतार वाल्मीकीयरामायण पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें।

भरताचार्य से लेकर आजतक जितने भी रसाचार्य हुए हैं, सभी ने स्वकीया में ही रस की स्थिति स्वीकार की है परकीया में तो रसाभास स्वीकार किया है। श्रीजानकीवल्लभजी के उपासकगण भी श्रीमैथिली की अंगभूता सखियों के साथ ही प्रियतम का रमण मानते हैं।

मधुररसरञ्जिता श्रीमिथिलापुरी में श्रीराघवेन्द्र की विवाहलीला में रसराज की निर्झरिणी बही, वह आज भी भावुकों के हृदय में तरंगित हो रही है, अब तो इसकी रसधारा इतनी वेगवती चल रही है कि बहुत से तापत्रयसन्तप्त चेतनों के हृदय में भी इसका सञ्चार होने लग गया है।

श्रीमैथिली के साथ उनकी सखियाँ भी श्रीमिथिलाजी से आई थीं, दासियाँ भी आई थीं। देखिये—"अथ राजा विदेहानां ददौ कन्याधनं बहु। ......ददौ कन्यापिता तासां दासीदासमनुत्तमम् (१।७४।४-७), अर्थात् श्री जनक राजा ने बहुत-सा कन्या-धन दिया तथा स्वर्ण-हिरण्य-मुद्रा-विद्रुम आदि दिया गया एवं उन सभी कन्याओं की सेवा के लिये दासीदास बहुत से दिये गये। यहाँ दासी से पृथक् कन्याधन से स्पष्ट है कि ये कन्यायें श्रीमैथिली की सखियाँ हैं, आगे ग्रन्थभर में इनकी चर्चा पर्याप्त रूप में आई है।

अयोध्याकाण्ड से ज्ञान होता है कि प्रत्येक राजकुमारियों के साथ उनकी सखियाँ आई थीं जो दासियों से पृथक् थीं।

हृष्टाः खलु भविष्यन्ति रामस्य परमाः स्त्रियः।
अप्रहृष्टाः भविष्यन्ति स्नुषास्ते भरतक्षये ॥ २।८।१२।

मन्थरा श्री कैकेयीजी से कहती है कि श्रीरामराज्याभिषेक होनेसे श्रीराम की परमप्रिय स्त्रियाँ प्रसन्न होंगी। आपकी पुत्रवधुएँ अप्रसन्न होंगी। यहाँ स्नुषा शब्द पतोहू में रुढ़ि है, इससे तो प्रत्येक राजकुमारों की अनेक पत्नियाँ थीं ऐसा ज्ञात होता है। महर्षि वाल्मीकि के हृदय में अगाध रस भरा हुआ था, जो कि समय-समय पर एवं अनवसर पर भी स्थल-स्थल पर व्यक्त हो उठा, देखिये—श्री राघवेन्द्र समुद्र तट पर कुशासन पर शयन कर रहे हैं। भला, इस समय में गम्भीर शृङ्गार वर्णन का क्या प्रसंग था? किन्तु इसीको तो रसोद्गार कहते हैं कि जो अनवसर में भी रसप्रवाह निःसृत हो। श्री राघवेन्द्र की भुजा को देखकर महर्षि को अन्तःपुर का दृश्य सम्मुख उपस्थित हो गया। बस, सुन लीजिये—

वाहुं भुजगभोगाभमुपधायारिसूदनः।
जातरूपमयैश्चैव भूषणैर्भूषितं पुरा ॥
वरकाञ्चनकेयूरमुक्ताप्रवरभूषणैः।
भुजैः परम नारीणामभिमृष्टमनेकधा ॥
चन्दनागुरुभिश्चैव पुरस्तादधिवासितम्।
बालसूर्यप्रतीकाशैश्चन्दनैरुपशोभितम् ॥
शयने चोत्तमांगेन सीतायाः शोभितं पुरा।
तक्षकस्येव सम्भोगं गङ्गाजलनिषेवितम् ॥ ६।२१।२-५

यहाँ वाहु के अनेक विशेषणों में केवल एक ही विशेषण पर विचार कीजिये—

श्रेष्ठ स्वर्ण के केयूर एवं मोतियों के भूषणों से विभूषित परम नारियों की भुजाओं से अनेक बार अभिमृष्ट (रस क्रिया

से मर्दित) श्रीराघवेन्द्र की भुजा है। यहाँ परमनारी शब्द उन पाणिग्रहीता रमणियों के लिये ही प्रयुक्त है। भला दासियों की भुजाएँ ऐसी क्यों होतीं ? यदि होतीं भी तो जहाँ "सयने चोत्तमांगेन सीतायाः शोभितं पुरा" अर्थात् जो भुजा शयन में पूर्व श्रीमैथिली के मनोहर शिर से भूषित था। ऐसे स्थल में 'परमनारी' शब्द का अर्थ क्या होगा ? इसका निर्णय तो शास्त्रवेत्ता भावुक महानुभाव कर सकते हैं। इसी प्रकार सुन्दरकाण्ड में श्रीमैथिली ने श्रीहनुमानजी से कहा है कि "पिता की आज्ञा पालन करके वन से लौटकर श्रीप्रियतम विपुलेक्षणा (बड़ी-बड़ी आँखवाली) रमणियों के साथ निर्भय होकर रमण करेंगे।"

पितुर्निदेशं नियमेन कृत्वा वनान्निवृत्तश्चरितव्रतस्त्वम्।
स्त्रीभिस्तु मन्ये विपुलेक्षणाभिस्त्वं रंस्यसे वीतभयः कृतार्थः॥

इसी प्रकार उत्तरकाण्ड में अशोकवाटिका विहार प्रसंग में भी रास-विलास का वर्णन है।

उपानृत्यंश्च राजानं नृत्यगीतविशारदाः।
बालाश्च रूपवत्यश्च स्त्रियः पानवशंगताः॥
मनोऽभिरामा रामास्ता रामो रमयतां वरः।
रमयामास धर्मात्मा नित्यं परम भूषिताः॥ ७।४२।२२

यहाँ, मनोऽभिरामा रामाओं के साथ विहार का वर्णन स्पष्ट रासलीला का द्योतक है। 'रमयतांवरः श्रीरामः ताः सर्वाः रमयामास' रमण कराने में श्रेष्ठ श्रीरामजीने उन सभी नायिकाओं को रमण कराया, यह शब्दार्थ है।

विशेष जिज्ञासा के लिये श्रीआदिरामायण, कौशलखण्ड, शिव संहिता एवं श्रीमधुराचार्य प्रणीत श्रीसुन्दरमणिसन्दर्भ, श्रीरामतत्त्व प्रकाश एवं श्रीहर्य्याचार्य प्रणीत श्रीरामस्तवराज भाष्य, श्रीजानकीगीत आदि ग्रन्थों को देखना चाहिये।

"एकपत्नीव्रतधरो राजर्षिचरितः शुचिः ।" श्रीमद्भागवत के इस वचन से, तथा 'न रामः परदाराश्च चक्षुर्भ्यामपि पश्यति' वाल्मीकीय के इस वचन से कतिपय सज्जन अधिक घबड़ाकर सहसा कहते हैं कि श्रीराघवेन्द्र तो एक पत्नीव्रत थे।

इन श्लोकों का अर्थ किसी महापुरुष से श्रवन करना चाहिये, इनका अर्थ यह है—

एकया मुख्यया श्रीसीतयैव सह अग्निहोत्रादिव्रतं धरतीति एक पत्नीव्रतधरः। एक मुख्य श्रीमैथिली के साथ ही अग्निहोत्र आदि गृहस्थोचित धर्माचरण करते थे। किन्तु, भोज पत्नियाँ तो अनेक थीं। श्रीरामजी परदारा को आँखों से नहीं देखते थे'—इसका अर्थ है कि परकीया का सम्बन्ध श्रीरामजी में नहीं है, अन्यथा सम्पूर्ण वाल्मीकीय के बहुपत्नीत्वबोधक वाक्य व्यर्थ हो जायँगे। ग्रन्थकार ने प्रस्तुत ग्रन्थ में इन विषयों पर समीचीन विचार किया है। यथा—

"परकीया सम्बन्ध जानकी रमण न फावित।
सखी समूह विशेष तत्सुखी स्वाद विभावित॥"

अब प्रस्तुत ग्रन्थ के विषय में स्वल्प विचार व्यक्त किया जाता है। इस ग्रन्थ का नाम है 'युगल विनोद विलास' इसमें श्री युगल प्रियाप्रियतम की रसमयी लीलाओं का अपूर्व चित्रण है। इसका आधार तो आर्ष ग्रन्थ 'श्री हनुमत्संहिता' है, किन्तु ग्रन्थकार के हृदय की अगाध रसता एवं विज्ञता के कारण ग्रन्थ आधारभूत हनुमत्संहिता से अत्यन्त विलक्षण एवं विस्तृत हो गया है। स्थल विशेष में उपासना तत्व का विवेचन हृदय

हारी है। उपासना में निष्कामता ही प्राण है। उपासक दानी होते हैं याचक नहीं, अपने प्यारे के सुख में सुखी रहना अपना चरम प्राप्य मानते हैं। ग्रन्थकार ने स्वसुख की निन्दा की है तथा तत्सुख की प्रचुर प्रशंसा की है। देखिये—

"जनक किशोरी विभव वाम वरनी पूरबहीं।
तिनहिं के सह रमत रास रसिकेश्वर अबहीं॥
अपर नायिका रमन जानकी रमन न फावित।
सखी समूह विशेष तत्सुखी स्वाद विभावित॥
हठवश स्वसुख प्रधान करहि जे बिना विचारे।
तिनहीं न मोद विनोद युगल सम्पति उरधारे"॥(अ०४)

नायक शिरोमणि श्री रघुनन्दन में अनुकूल, दक्षिण आदि सभी भेद विद्यमान हैं, किन्तु समय-समय पर रसवैचित्री के लिये दक्षिणादि लक्षण भी व्यक्त होते हैं।

दक्षिनादि सब भेद खेद बिन समै समै पर।
प्रानप्रिया आधीन अखिल कलकेलि भाव भर॥
समय समय सुख उदय हेत प्रीतम प्रिय प्यारी।
रचहिं अनेक विनोद कुतुक कल कुंजन चारी॥
परकीया सम्बन्ध सीयवल्लभ अयोग अति।
सरस स्वकीया संग समय सुख सुकर रहस अति॥
वृथा वकत वद वैन जैन मत सम ते नांहक।
परकीया रति असति अवध आभरन न ग्राहक॥
काहू विधि नहिं उचित इतै रति आन तियन सन।
केवल श्री मिथिलेश किशोरी सुकरबिक्यो मन॥"

यद्यपि श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज ने लघु-बृहत् चौरासी ग्रन्थों का निर्माण किया है एवं सभी ग्रन्थ विलक्षण हैं तथापि इस ग्रन्थ में जिस तरह कविता-कामिनी शृङ्गारित है, अन्यत्र नहीं दीख पड़ती है। रस एवं साहित्य के अंगों से परिपूर्ण यह ग्रन्थरत्न केवल भावुकों के ही नहीं अपितु काव्य रसिकों के हृदय को भी सुशोभित करेगा, इसकी रचना विहार स्थली श्रीचित्रकूट धाम श्रीजानकी कुण्ड पर संवत् १९१० में हुई है, जिसका संकेत ग्रन्थ के अन्त में है। रसिक महानुभावों की प्रेरणा से श्रीपलटलालजी वकील, एवं आचार्य श्रीरामलोचनशरणजी (लहेरियासराय) के आर्थिक सहयोग द्वारा यह ग्रन्थ मुद्रित होकर भावुकों के सम्मुख उपस्थित है, इसके रसास्वादन से रसिकों के हृदय में रस प्रवाह प्रवाहित होगा। जिस प्रकार रसिकाग्रगण्य श्रीहनुमान्‌जी ने मुनिराज श्रीअगस्त्यजी को रसामृत पान कराया, तथा बेसुध कर दिया, मुनि की ऐसी दशा हो गई कि—"जानत नहिं पग परत धरत बेसुध कित के कित। दम्पति विमल विहार बीच उरभ्यो अविचल-चित।" उसी प्रकार रसाचार्य श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज ने भी इस ग्रन्थ के रसामृत पान द्वारा भावुकों को प्रेम में विभोर कर दिया, आगे अनन्त काल तक रसिकगण इसका रसास्वादन कर कृतार्थ होंगे।

श्रीरामवल्लभानिकुंज
(गोलाघाट-श्रीअयोध्याजी)
२३।५।५७

रसिकानामनुचरः
पं० सीतारामशरण

द्वितीय संस्करण पर

— दो शब्द —

इस ग्रन्थ का प्रकाशन पटना से हुआ था किन्तु वह अप्राप्य हो गया। प्रेमियों की अधिक मांग के कारण रसिक शिरोमणि स्वामी श्रीरामकिशोरशरणजी महाराज (कोठे पर) की आज्ञा से श्रीहनुमत् प्रेस श्रीअयोध्याजी में पुनः प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हुआ। इसके प्रकाशन में आर्थिक सेवा श्रीराम-प्रियाशरणजी (पंजाबी) ने की है ये श्रीमहाराजजी के ही कृपा पात्र हैं और श्रीजानकीवल्लभजी के पादारविन्द के अनन्य अनुरागी हैं। श्रीबड़ेमहाराज के श्रीचरणों में आपका अगाध अनुराग है। इसके पहले भी कई ग्रन्थ का प्रकाशन करा चुके हैं आगे भी आचार्य सेवा का सौभाग्य आपको प्राप्त हो ऐसी श्रीयुगलसरकार से कामना है।

सौभाग्य से इस ग्रन्थ के प्रूफ संशोधन की श्रीमहाराजजी से आज्ञा मुझे मिली और यथा सम्भव मैंने उसे करने का प्रयत्न भी किया किन्तु कुछ तो त्रुटि हो ही गयी होगी इसके लिये पाठकों से क्षमा चाहते हैं।

श्रीलक्ष्मणकिला पीठाधीश आचार्य स्वामी श्रीसीता-रामशरणजी महाराज के पादपद्म परागाश्रित-

रथयात्रा के अवसर पर

ता० ३—७—६२

मैथिलीशरण

श्रीलक्ष्मणकिला श्रीअयोध्याजी।



श्री साकेतवासी अनन्त श्रीयुक्त सन्त शिरोमणि
श्रीयुगलनन्य शरण जी महाराज



श्री युगल सरकार

॥ श्री युगल विनोद विलास ॥

श्रीजानकीवल्लभाय नमः । श्रीप्रियारसलम्पटाय नमः ॥
श्रीसर्वेश्वर्य्यै श्रीमत्यै चन्द्रकलायै नमः ॥
श्रीमते हनुमते नमः ॥

प्रथम अध्याय

रोला छन्द

श्री सीता वल्लभ विहार वर विभव विधायक ।
श्री सद्गुरु सुषकंद कला कमनीय प्रदायक ॥
बंदौं बिसद विनोद मोद--मंदिर पद पावन ।
श्री गुरुवर विज्ञान भवन अज्ञान नसावन ॥१॥
जयति जानकीजानि सरस रति रहस प्रकासक ।
संतत स्वाद प्रसाद याद अनुराग सुभासक ॥
सियवर रहस रसाल कहौं करुणा कल कीजे ।
बानी विमल विचित्र बदन विकसै वर दीजे ॥२॥
श्री श्री परिकर दिव्य भव्य गुण मंडित पंडित ।
दंपति केलि कलोल सुधासर मगन अखंडित ॥
जै माधुरी मनोजमथन मोहन मनमोहन ।
सिय सुंदर सुकुमार प्यारप्रद संतत सोहन ॥३॥

दंपति चरन-सरोज सुरज रस सदन मनावों ।
जिनकी करुणा कलित पाय कलकुंज समावों ॥
वरनों विमल विहार हार हिय हनूमान वर ।
सुनत सोहावन श्रवन गुनत गुण निधि सनेह कर ॥ ४ ॥
श्री अगस्त्य कपिराज सरस संवाद सुधा हद ।
परम प्रेम सुष पान प्रान प्रीतम प्रमोद प्रद ॥
श्री हनुमत्संहिता माँझ अध्याय पाँच प्रिय ।
जुगल चारुचित चरित अमी भल भरित हरन हिय ॥५॥
अमल मोद घन रहस रास रस संचित सोहत ।
रसिक अनन्य अनूप मधुर मानस मति मोहत ॥
प्रेम वपुष प्रिय पंच प्रान सम प्रानन कारन ।
युगलानन्य अधार धार नीरस निधि तारन ॥ ६ ॥
भाव भजन वर बोध विसद रसदायक अदभुत ।
अवलोकत आनंद अधिक बाढ़त सुभ संयुत ॥
सियवर रहस चरित्र परम पीयूष सवादी ।
संगर रहस सनेह सजत सद्ररस प्रतिपादी ॥७॥
महावीर रघुवीर रंग राते मन माते ।
रसिक जनन प्रतिपाल करन कामद सुषमाते ॥
सहस मार मद मान समन सौंदर्य येक रस ।
अति अनुपम गुन सिंधु सहित दंपति किये निज वस ॥८॥
वारक कहुं दृगपात होत उत्पात रहत नहिं ।
विदित विमल वर विरद स्वर्ग पाताल सप्त महि ॥

महिमा अगम अपार वदत निगमागम निसदिन ।
कीन्हें यतन अनेक लहैं नहिं लाल आप बिन ॥९॥
दीजे दया निकेत विमल मति रस जस भीनी ।
त्रिगुण पार सुष सार नेह नूतन अति झीनी ॥
श्री अगस्त्य मुनिराज नमो पदकंज ध्यान धरि ।
जिनके बस सिय श्याम सुभग वंदित विधि-हर-हरि ॥१०॥
संसय सोक अपार सिंधु सोषन पन पोषन ।
आतापी वातापि दोष दुष दाहक रोषन ॥
सियवर भजन प्रभाव देव दानव मुनि पूजित ।
रसना निर्मल नाम नेह निसवासर कूजित ।११॥
मंत्रराज नव नेम प्रेम अविचल अनूप विधि ।
कर जोरे सब भाँति खड़ीं आगे आठो सिधि ॥
विह्वल दसा अडोल अधिक अनमोल बोल वर ।
सिय बल्लभ सुष सौज सुभग संपति संचित तर ।१२।
समय सुहावन सरस रहस सुष संजुत छाई ।
निरषि नवल निज नैन कुंभ संभव भल भाई ॥
वाढ़यो विसद उमंग रंग अनवधि निज नीकी ।
वचन अगोचर चाह नाह गुन अमल अमीकी ॥१३॥
केहि समीप दिल दीप ललित गुन पूछों जाई ।
श्रवन विना पल आध व्याध सम प्रगट लषाई ॥
सद्गुरु रसिक नरेस बिना को देस सुझावै ।
हदै दाह दुष दोष कृपाकरि कौन बुझावै ॥१४॥

याही विधि मन मनन करत आरत जुत मुनिवर।
आय गये रस रास रसिक वेदन हर कपिवर॥
महातेज तर पुंज कुंज वीथिन के चारी।
अति अनन्यता सीम नीम सम विषय बिसारी॥१५॥
निरषि नेहमय देह नैन निज नवल निहाला।
भये गये दुष दूरि भूरि करुना छवि जाला॥
पुलकित प्रेम प्रकास प्रीति प्रति पद गदगद गर।
निकट पहुँचि सत भाँति प्रनय नति करि हर्षित उर॥१६॥
श्री समीर सुत सुहृद हृदय गुनि जुगल उपासी।
भेटे कंठ लगाय नेह निधि सविधि विलासी॥
मिलन परस्पर रसिकराज रति राग अनूपम्।
केहि विधि करौं बषान वचन मन पार सरूपम्॥१७॥
दसा विचित्र विदेह भई दोउ ओर विलच्छन।
युगलअनन्य प्रमोद अमल चहि छके विचच्छन॥
बहुरि बिचारि मुनीस धीर धरि गिरा उचारी।
मधुर मनोहर सुधा स्वाद समता सुचि प्यारी॥१८॥
बीति गये बहु बार बैठिये बिमल वरासन।
करुनानिधि निज जानि मोहि कीजे कछु सासन॥
विनय वलित वर वचन श्रवन सुनि कपि कुल नायक।
सुभ आसन आसीन भये सुमिरत सिय नायक॥१९॥
मुनिवर षोड्स भाँति सरुचि पद अर्चन कीनी।
परमानंद प्रधान मोद मानस धरि लीनी॥

प्रनय सहित कर जोरि बचन पुनि मुनिवर भाषी ।
समुझि अधिक अनुकूल रसिक मंडन सद साषी ॥ २०॥
कृपा निधान सुजान मान मद असद निवारक ।
सिय वल्लभ सुष हेत निषिल रसिकन दुष दारक ॥
श्री मुख वचन विलास प्रथम सुनि सहज सोहावन ।
सिय वल्लभ परतत्व परमप्रिय पातक पावन ॥२१॥
अतुलित तेज प्रताप तापहारक हिय हर्षन ।
दृढ़ता रति रस बूँद सरस सज्जन उर वर्षन ॥
मधुर रहस्य विहार सतत सुचि सार सुधासम ।
गोपनीय सब भाँति रसिक जन प्रान प्रीयतम ॥२२॥
देव असुर नर नाग यक्ष गंधर्व वेद विद ।
चतुरानन जगदीस सकल श्रुति साधन कोविद ॥
कपिलदेव मुनि व्यास अमल मति सारद नारद ।
श्री प्रह्लाद उदार सनक सौनक मुनि पारद ॥२३॥
जाग्यवल्कि गुन ऐन महा मुनिवर्य परासर ।
श्रीशंकर सिरताज भक्त अनुरक्त गुनाकर ॥
श्री शुकदेव अनूप सहज सर्वज्ञ रमापति ।
ईस कोटि गत और अमित अति प्रबल महामति ।२४॥
श्री सर्वानी सक्ति सुभग सावित्री सुचितर ।
मूला प्रकृति प्रधान विश्वकारिनी गुर्नंनि पर ॥
सेष असेष सुबोध सदन तिमि भक्त विभीषन ।
अपर अनंत अगाध चित्त मुनिवर मति तीषन ।२५॥

अति अलभ्यतम मधुर चरित श्रीजानकिवल्लभ ।
पूर्व सु किये निरूप जिते तिनहूँ अति दुर्ल्लभ ॥
जाने केहि विधि जीव जगत जंजाल विगोये ।
सबल अविद्या रैन माँझ मनमथ छकि सोये ।२६॥
स्वादी रहस रसज्ञ विज्ञ नहिं प्रभु सम कोई ।
जिनके विसद विहार बिना रस परस न होई ॥
सर्वोपर सिरमौर आप कल केलि कलाकर ।
कहिये केलि प्रधान चरित अति ललित सुधासर ॥२७॥
नित्य सु परिकर बृंद बीच राजत हौ संतत ।
नाम ललित मुद मिलित चारुशीला सत संपत ॥
यूथेश्वरी प्रधान निकर परिकर पद पूजित ।
युगल विलास विचित्र विमल वानी कल कूजित ।२८॥
रहस सदन पहिचान जानि प्रनमत हौं पुनि पुनि ।
करुनाकर अविलंब कहो अवलंब प्रान धुनि ॥
जो मोपर निज कृपा रहस सियलाल बषानो ।
परम मोद रसषानि रसिक जीवन छवि छानो ।२९॥
अमल अपूरब चरित भरित रस सज्जन भाषैं ।
सुनि सुनाय सद स्वाद सहज रस निधि रस चाषैं ॥
परम गुप्त गुन ध्येय पेय अधिकारी पाई ।
करें निरूपन नीक नेह वर्द्धन रसिकाई ॥३०॥
उर उत्साह अथाह कृपा करि पूरन कीजे ।
दंपति चरित अजूब खूब रस भरित कहीजे ॥

सुनि सनेह संमिलित वचन मृदु मधुर रसिकवर ।
गदगद गिरा गंभीर गदन लागे लषि मुनिवर ।३१॥
अहोभाग अनुराग लाग वर बाग वंध्यो मन ।
पूछी परम प्रधान प्रश्न पावन प्रिय गुन गन ॥
गोप गुह्य कल कुंज केलि कमनीय निरंतर ।
तदपि कहो अनवद्य रहस तजि सब विधि अंतर ॥३२॥
निज निर्मल सिद्धांत प्रगट करि आज बषानो ।
लषि तव उर उत्कंठ विपुल मम हिय सरसानो ॥
फलित विशेष विहार गुप्त कीने पर मुनिवर ।
ताते सदा सम्हारि राषिये निज उर अंतर ॥३३॥
परषि परम प्रिय प्रीति रीति अविगीत बषानो ।
रसिक जनन अधिकार रमन रस सतत पछानो ॥
प्रथम अमल गोलोक निषिल निरनय निरधारी ।
वैभव वलित विसेष कही हम तुम हिय धारी ॥३४॥
अब वरनत मृदु मधुर अमी रस रहस सुहावन ।
महा मोद उत्साह सदन परिकर मन भावन ॥
सब विधि सज्जन हृदय कलुषहारी पर पावन ।
जीवन जरी विचित्र रसिकजन जान जिवावन ॥३५॥
प्रानहुँसे सब भाँति परम प्रिय हिय अनुमानी ।
जनि दीजै बिन नेह निरस नर निकट सुवानी ॥
सुनहिं सरस सिंगार सदन साकेत सिषरे ।
पावे अविचल मोद पलक नहिं ललन बिसारे ।।३६॥

श्री सहस्र संपन्न जयति श्री अवधराज प्रिय ।
अति उदार रमनीय रीति रसिकेस हरन हिय ॥
जै जै श्रीसाकेत केत अनुराग भाग भल ।
परब्रह्म वर देस रूप सुष सार सुधा थल ॥३७॥
जै श्री सरजू सरित भरित दंपति रस खासी ।
निरखत निर्मल नेह विभव वितरति छवि रासी ॥
जै प्रमोदवन कुंज नवल द्वादस वन उपवन ।
जयति जुगल कलकेलि ललित मम प्रिय जीवन धन ॥३८
जै श्री परिकर दिव्य भव्य रस विसद बिहारी ।
जै आनंद निवास महल मोहन मन हारी ।
निरषि नवल रितुराज अवध मंडल नृप प्रियतम ।
कुसुमित कलित अनूप मधुर फल फलित सुधासम ॥३९॥
कमलनैन रस ऐन मैन मद मान विभंजन ।
रसिकराज सत सहस अमित श्री सहित सुरंजन ॥
क्रीड़ारस लय लीन ललित लंपट लालित नित ।
प्रिया प्रेम आधीन लाड़िली लाल बंध्यो चित ॥४०॥
महा मधुर सुष सहित सुभग नषसिष सुकुमारी ।
नाम अमल अभिराम सिया श्री जनकदुलारी ॥
अतुलित सुदुति विलोकि प्रिया प्रति वचन उचारी ।
नवल नाह अनवद्य अमल श्री अवधविहारी ॥४१॥
श्री सरजू सरि तीर चलिय बल्लभ बलिहारी ।
मम मानस उत्साह विपुल विधि प्रानपियारी ॥

रोके रहत न चित्त सरस सागर प्रवाह सम।
प्रानवल्लभे समुझि स्वाद संतत संजुत रम ॥ ४२ ॥
इमि वर वचन विनोद श्याम सुंदर सुचि सुभ कहि।
प्रिया कंज कर कलित ललित निज कर पंकज गहि ॥
चले चतुर सिरताज रहस मंडन रघुनंदन।
महाराज अभिलास हृदे पूरन अभिनंदन ॥४३॥
विसद विलासी अखिल देहधारी मन मंडन।
नीरसपन जन मलिन मान मद मोह विहंडन ॥
रास रसिक सिरमौर महा माधुर्य विहारी।
दंपति नेह स्वरूप सषी संपति सुषकारी ॥ ४४ ॥
अलिगन लषि चित चाह युगल उत्सव अनुरागी।
प्रेमा परा प्रधान दसा उज्वल रस रागी ॥
सहज सोहावनि स्वच्छ सरस सुषमा संजुत सब।
जिनकी नष मनि प्रभा निरषि छवि उमा रमा दब ॥४५
मंद मधुर मुसक्यानि सहित सब सषी सयानी।
सारी असित विचित्र सजे सौरभ रसषानी ॥
मध्य भाग अति ललित कलित कटि जंघ जथोचित।
उपमा निषिल निरस्त कहत लागत चित अनुचित ॥४६
रूप अनूप विचित्र जड़ित जौवन मनि मानिक।
भूषन वसन विभास विविधि नष सिष वर बानिक ॥
पीन नवीन रसीन उरज उज्वल रस भीने।
रतिपति कंदुक कोटि विल्वफल वारन कीने ॥४७॥

गान तान बंधान कला कामिनि कुसला अति।
परमा प्रभा प्रकास प्रेम पूरित दंपति रति ॥
परम पंडिता प्रीति प्रचुर पुस्तक अनुरागिनि।
कोक कला रस रीति विमल गुण जुत सौभागिनि ॥४८॥
बाजन मधुर अनंत बजावन बहुविधि जाने।
सियवर चित्त सुवित्त हरन की कला पछाने ॥
जिन आलिन की कला अंस-आवेस लेस लहि।
कमलादिक बहु वाम विदित वैभव तीनो महि ॥४९॥
सेवहिं संतत चरन कंज कमनीय निहारी।
समुझि विचित्र विभूति सषी सुष सरन सुधारी ॥
सिय स्वामिनी सनेह सजी सहचरी अनूठी।
अधिक एक से एक निरस दिस सें नित रूठी ॥५०॥
दंपति सुपद सनेह सुधा सागर रस भीनी।
तन मन धन प्रिय प्रान युगल पर वारन कीनी ॥
अमितन संख्या योग यूथ आलीगन जेती।
ललित लड़ैती निकट चहूँदिसि रँग रस लेती ॥५१॥
त्रिसद विहार विलच्छन लच्छन सहित सुहाई।
स्वादु सु चंपक चारु मध्य सम वरन बकाई ॥
परमानंद विनोद वलित अद्भुत सुकुमारी।
त्रिविध भाव अनुभाव हाव इंगित अनुहारी ॥५२॥
दंपति सैन सुभाव सुरुचि प्रतिपल भल आने।
समय सहस अनुकूल सरस सेवा सनमाने ॥

तिन आलिन के मध्य मधुर मन मोहन दंपति।
परतम प्रेम प्रकास विपुल वरधन सत संपति ॥५३।
सुचि सुकुमार सलोन सरस सौंदर्य सोहावन।
मृदुतर निज नवनीत अंग अनुदिन मन भावन॥
अमित मार मन रमन मधुर मन मोहन दोऊ।
उपमा अखिल अकाज साज कवि वरनत सोऊ ॥५४॥
अंग अंग छवि सिंधु लहर लावन्य लसत नित।
लखि लोचन ललचात ललकि लागत समेत चित॥
कुंकुम कलित कपूर चारु चंदन केशर कल।
चर्चित अमल अनूप अंग आमोद ललित थल।५५॥
मंजुल सुमन गुलाब विसद बेली अलबेली॥
मधुर मल्लिका कुसुम चमक चय चटक चमेली।
अमित रंग रस सदन सुमन मृदु माल मनोहर।
राजत रसिक नरेस युगल गल सुरभित सोहर ॥५६॥
सरस सुगंध सुदाम सकल दिसि फवि छवि फैली।
अति आमोद अनूप रूप अद्भुत सुष सैली॥
श्रीनन परम प्रवीन परस्पर प्रीतम प्यारी।
युगल केलि कमनीय कंद सत चित वपु धारी ॥५७॥
दोऊ मन मति पार हार हिय परिकर राजैं।
नवल नैन सत सैन सहित दंपति भल भ्राजैं॥
लीला ललित लषाय रसिक जन तन मन मोहन।
प्रेम पियूषावेस वेस सुष दोहन सोहन ॥५८॥

कंज कंज कर कलित गहे गुन निधि निज दंपति।
विट्ठल दसा विचित्र सजे सुषमा सत संपति॥
याही विधि वर विपिनि रमनकारी श्री दंपति।
रसिकन मोद प्रमोद देत कल केत सु कंपति ॥५९॥
चलैं मत्तगज चाल चतुर चूड़ामनि मृदु तर।
नैन नवीन मिहारि नेह गुन गेह बढ्यो वर॥
मधुकर निकर विसेष भ्रमत पद कंज सुरभि लहि।
सुधि बुधि सब बिसराय महारस मगन मौन गहि ॥६०॥
नष मनि चंद्र विचित्र निरषि हिय हरषि अधिकतर।
चकित चकोर किसोर ललकि लागे बिछोह डर॥
सरस श्याम घन सुभग सहित सौदामिनि देषी।
चातक मधुर मयूर युगल जीवन जिय लेषी ॥६१॥
चमकि चलन अवलोकि लाज जुत वंचित विट्ठल।
करिवर हरि अवतंस हंस पावत न नेक कल॥
नूतन छवि छन छटा घटा लषि छकि दंपति अति।
निज उन्माद विहाय मूर्छित परयो सहित रति ॥६२॥
विपुल विनोद समेत हास रस रास सषी गन।
गान तान सुष पान नटन निज नेह सुधा घन॥
विविधि विचित्र विहार वदन दरसक बाजन वर।
सुनत सोहावन सब्द सहचरी सहित सीयवर ॥६३॥
दंपति प्रेम प्रवाह थाह बिनु अनु दिन भीने।
चहुँ दिसि परिकर निकर सौज नाना विधि लीने॥

अति अनूप आनंद सदन वर विपिनि विलोकी।
सखिन सहित सियलाल ललित लोनी गति रोकी ॥६४
तेहि वन बीच विचित्र त्रिमल वेदी मनि मंडित।
आसन अति रमनीय प्रभा अनवद्य अखंडित ॥
ता ऊपर आसीन नवल दंपति सुष सागर।
भये विभव वर ऐन मैन मद मथन उजागर ॥६५॥
ललित लाड़िली लाल लसन लषि सषी सयानी।
प्रमुदित भईं विशेष वेष अविसेष हिरानी ॥
बहुरि विचारि विलास रास रस कौतुक कामिनि।
परिचर्या प्रिय करन लगी अनुपम अभिरामिनि। ६६॥
नाना भाँति सुगंध माल छवि जाल सँवारी।
संस्कार सम्पन्न असन अति मधुर सुधारी ॥
जुगल ललन हित स्वाद सरस सुचि सुरुचि सजाई।
आली अतुल प्रमोद लही लषि नवल निकाई ॥६७॥
बहुरि वदन अँचवाय विसद वीरी विनोद जुत।
एला कलित कपूर सुरभि संजुत दीनी द्रुत ॥
मुख माधुरी निहारि नटन लागीं अनुरागीं।
सहचरि वृंद रहस्य सरस उत्सव रस पागीं ॥६८॥
अति अद्भुत आनंद कंद वन सघन सोहावन।
मतवारे मधुमत्त मधुप घूमैं सरसावन ॥
अमल अनंत अनूप रूप वर विपिनि विहारी।
प्रानप्रिया प्रिय अंस सुभुज छवि निधि निज धारी ॥६९

जनकनंदिनी नेह नवल नेमी विनोद वस।
रास रसिक सिरताज सतत सौंदर्य एक रस॥
रस भाजन रस रूप रहस रस मंडन मन हर।
विजय विभूति विचित्र भामिनी सहित सरस तर॥७०॥
श्री सरजू तट निकट अघट रस रमन रंगीलो।
परम गोप मृदु मोद करन हिय हरन रसीलो॥
सहज सनेह समेत सीय संजुत सुष सागर।
नमो नित्य निज नेह नेम पूरक नृप नागर॥७१॥
रसिक प्रान प्रिय प्रेम निलय निर्मल गुन ग्राही।
वंदो वारंवार विसदपन सुमन निबाही॥
अमल प्रथम अध्याय मध्य संछेप रहस धुनि।
वरन्यो विमल विहार सदन सुष उदय श्रवन सुनि॥७२
श्री समीर सुत सुघट सुवन संवाद सरस सुचि।
युगलानन्य निहाल हृदे बाँचत समेत रुचि॥
आगे अपर अनूप चरित रस भरित बषानों।
सुनि गुनि परमानंद असल अंतर अनुमानों॥७३॥
है जीवन धन सार रसिक जन निसदिन सेवें।
भुक्ति मुक्ति तृन तुच्छ समुझि सपने नहिं लेवें॥
जौ लौं श्री जानकी रमन चित चरित न जानत।
तौ लौं नाना रुच्छ मतन अंतर रुचि सानत॥७४॥

बड़भागी सब भाँति जौन जन सुजस सजीवन।
सेवैं सहित सनेह सतत रस अरस अछीवन ॥७५॥

इति श्री युगलविनोदविलासे विसदरसरहस्य प्रकासे श्रीअगस्त्य
हनुमतसंवादे हुलासे श्रीसीताराम संक्षेपविहार
सूचनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥



* द्वितीय अध्याय *

छंद

गिरा गंभीर विचित्र विमल बोले मुनि नायक।
श्री अगस्त्य गुण ऐन रसिक वल्लभ रस दायक॥
कहिये करुना पुंज कुंज कल केलि विनोदी।
श्री सियवल्लभ सरस सुजस सागर अनुमोदी ॥१॥
बहुरि विसद रमनीय सोक समनीय सुधाकर।
लीला ललित रसेस सहित सुष सीम प्रभाकर॥
प्रिया प्रेम परतंत्र रसिक सिर मौलि मनोहर।
विपिनि विहार विचित्र विविधि कीन्हीं किमि सोहर॥२
अधिक उमंग तरंग हृदय बाढ़त श्रवनन हित।
कीजे कृपा निकेत निरूपन नवल नेह वित॥
सुनि सनेह मय वचन रचन अनवद्य उदयहित।
श्री मुख मधुर विहार रहस वरने लागे रित ॥३॥

कानन अमल अनूप मनोहर निज दृग हेरी।
ललन रहस रस मत्त मधुर मोहन गुन ढेरी॥
कलित कदंब विचित्र विपिनि बहु वनन वलितवर।
साखा सफल रसाल रहत रितु सकल सुभग तर॥४॥
जेहि वर बाग विनोद बीच वेदी मनि मंडित।
हीरक हेम अमोल खचित चहुँ हरित अखंडित॥
परम प्रसन्न प्रभास सहित दंपति निवास तहँ।
आसन अमल अमोल लसत अति रुचिर अमित जहँ ५
सोभित सुषमा सदन नवल रघुलाल लली जुत।
दिव्य भव्य आभरन सजे परिकर प्रधान नुत॥
भीने सरस सनेह सुभग गुन रमन परस्पर।
मंद मधुर मुसक्यान मान मनहरन सुधा सर ६॥
प्रीतम प्रिया प्रवीन नित्य वय विमल एक रस।
नव किशोर माधुरी छटा छलकत मनोज बस॥
दस दिसि विपिनि विहार विलोकत कुंवर किसोरी।
नवल नैन निज नेह सहित पल पल प्रति जोरी।७।
नाना भाँति सुगंध सरस संजुत वन राजत।
कलित ललित कासार कंज मृदु मंजुल भ्राजत॥
फूले अति अनुराग प्रभा लहि निस दिन नीके।
मोहन मधुर मरंद महा मादिक अवलीके।८॥
दाम द्विरेफ समेत सतत सोभित सुषमा निधि।
मतवारे मधुपान किये कूजे अनेक विधि॥

परत उठत पुनि भिरत मत्तताई प्रगटाई।
रंजित अरुन पराग अंग अति ललित सोहाई ॥९॥
केचित कुसुम समूह मध्य मधु पीअत घायल।
आलस वस बेहोस जोस संयुत मन मायल ॥
कहुँ कमनीय मयूर छके छवि घन नव निरतत।
कतहुँ कीर रमनीय गान गुन करहिं अचिंतत ॥१०॥
अपर विहंग सुरंग चारु चामीकर अंगन।
राजहिं लषि रघुवंस सिंधु विधु विमल उमंगन ॥
ध्यान निरत निज नैन किये अनिमेष अचंचल।
चितवन मति लयलीन भये गत वपुष दृगंचल ॥११॥
सियवर रूप समाधि लगी भव भान भुलाने।
एकटक रहे निहारि जुगल छवि सुकर बिकाने ॥
सत चित मोद कदंब सुधा सागर रस माते।
अति अद्भुत गति पाय रहस सोभन सुषराते ॥१२॥
संसय रती न लेस देस इह अतिहिं अनूपम।
जानें रसिक नरेस पगे जे प्रेम स्वरूपम ॥
याही छवि की छींट अषिल ईसन तन माहीं।
जगमगाति रस एक सीयवल्लभ परिछांहीं ॥१३॥
क्या जानैं जड़ जीव रहस गति सब से न्यारी।
युगलअनन्य सनेह सजे विरले हिय धारी ॥
मुनिवर विमल विनोद विसद वन विहरन सुनिये।
जानि सजीवन मूरि हृदै अंतर नित गुनिये ॥१४॥

प्रान प्रिया जुत लाल ललित कानन छवि हेरी।
बाढ़्यो अधिक अमंद मोद अनुपम रस ढेरी॥
वकुल विटप बहु वलित ललित वर विपिनि विसेषी।
चितवत चितवित हरत देत आनंद असेषी॥१५॥
लोनी लतन समेत सुभग सर सबज सुहाये।
पारिजात छबि हरन परन प्रति प्रभा सजाये॥
भूरुह निरषत नैन नेक तनरुह प्रगटावत।
को कवि कहे स्वरूप सरस सोभा सुघटावत॥१६॥
संतत सरस किसोर मृदुल प्रिय-पल्लव मंडित।
आलवाल अनमोल महामनि रचित प्रचंडित॥
सुंदर सुमन सुभार नमित नाजुक लषात नित।
परसत रसा रसाल सदस सज्जन विचित्र चित॥१७॥
सुरभित सहज सुभाय पवन आसा सुगंध सजि।
निषिल लोक अविसोक होत आमोद अमल भजि॥
जिनहिं परस पवमान सरस सौरभ गुन पावत।
विपुल विटप वर वेलि विमल आमोद बसावत॥१८॥
भ्रमत भ्रमर भल भाव भव्य मधु मादक माते।
धावत पुनि महि परत उठत पीवत रस राते॥
बार बार रस धार मधुर मधि मगन रैन दिन।
रहत बहत आनंद अधिक अनयास विनय बिन॥१९॥
अति अद्भुत रमनीय सुधासम मधुर सरस फल।
असन करत षग वृंद सजत संतोष सुमन भल॥

नटहिं विहंग अनंग रंग राते अनेक विधि।
पगे प्रेम पन प्यार तुच्छतर गनहिं विभव विधि ॥२०॥
जेहि मोहन वन बीच कलित कंचन विचित्र महि।
राजत रतनन रचित खचित मनि प्रभा अतुल लहि॥
विसद वेदिका विविधि वरन दीपत दिसान प्रति।
दमकत चहुँधां रतन रचित दीवार दाम दुति ॥२१॥
कोकिल कीर मयूर मधुर रव पूरित प्रति पद।
सोभित सदन रहस्य रंग रचना संजुत सद॥
गान तान रसषान नवल आलीगन सुंदर।
अति गंभीर अनूप राग सुनि चकित पुरंदर ॥२२॥
भासत भवन विहार मार मद मथन मनोहर।
पूरित प्रेम प्रवाह सहज सुषमाकर सोहर॥
परम प्रकास निवास लसत पर्यंक अंक हर।
वर वसंत संकलित ललित सौभाग्य सुधासर ॥२३॥
अमित असतरन ललित बिछे बहु भाँति रंगमय।
उपमा नीरस निषिल लोक कीनो बरबस जय॥
तेहि थल अंतर रमत रमन मैथिली रसिक वर।
अंग अंग अनमोल लसत आभरन वसिक तर ॥२४॥
प्रिया प्रेम परतंत्र नवल नायक रस रासी।
संचित विसद विलास बिपिनि अंतर सुषमासी॥
अति अनूप माधवी मंजु मंडित निकुंज बन।
दिव्य भव्य नित नव्य मदन मोहन प्रमोद घन ॥२५॥

नाना मनि गन षचित अमल आभा अद्भुत अति।
सेष शारदा गनप बदत वैभव सकुचत मति ॥
आसन अमल अनेक अधिक अनमोल लसत तर।
विसद विलास विचित्र वसन विलसत बिसेष वर ॥२६॥
सौज समूह सोहाग राग राजत तहँ अनगन ।
रसिक सुजन जेहि जोहि मोहि नित रहहिं मगन मन ॥
मधुकर मधुर मरंद मत्त गुंजार करहिं कल ।
सुनत सोहावन सुखद सहज सुचि होत हृदय थल ॥२६॥
मंजुल कुंज निकुंज पुंज प्रतिभा भासित भल ।
परम प्रमोद प्रकास करन कारन अद्भुत अल ॥
नवल नाजनी नारि चित्त नित हरत करत सुष ।
मेटत ताप मनोज रहन नहि देत एक दुष ॥२८॥
पत्री प्रिय रस ऐन चैन वर वलित विपिनि नव।
अति अद्भुत मधु मदन महामुद उद्दीपन जव ॥
परमा अमित अपार सहित सोहत सुषमाकर।
दंपति केलि कलोल कामिनी कलित हृदै हर ॥२६॥
अति विचित्र वन बीच जुगल जगमगत छटा छवि।
नष मनिप्रभा निहारि अमित रति मदनमान दवि॥
बोलन ललन अमोल परस्पर वचन विलच्छन।
सुधा सार रमनीय सदन अनवद्य सुलच्छन ॥३०॥
कौतुक कला कलाप केलि संपन्न सरस सुचि।
प्रेमावेस बिसेस संकलित हृदै रहस रुचि॥

दंपति नेह निकेत विपिनि विहरत विनोद वस।
अंग अंग रस रंग सदन आभरन लसन लस ॥३१॥
बीरी विसद विचित्र वदन विलसत विनोद कर।
सरस सुगंध निवास निषिल नेहिन तन मन हर॥
चितवन चंचल चलन चाव चित चौगुन चष चहि।
अमल अतोल अमंद द्वन्द विन लहत मोद महि॥३२॥
मंद मधुर मुसक्यान नेह रसषान प्रान प्रिय।
ललित लोनाई लहर सहर सौन्दर्य हरन हिय॥
कोटि काम कमनीय दाप दमनीय दाम दुति।
महामाधुरी मंजु मधुर मंडित दंपति अति॥३३॥
मानस वचन अतीत भाव वल्लभ अथाह निधि।
रूप अनूप असेष सेष मन पार सकल विधि॥
रस निवास रति रमन शास्त्र सुष सिंधु विसारद।
सुजस रहस्य अपार वदत निगमागम नारद॥३४॥
सरस श्याम घन विसद दाम दुति देह गेह गुन।
लसत ललित वनमाल विमल वग पाँति परम पुन॥
गरजन गिरा गंभीर धीर उर पीर प्रदायक।
चातक चतुर सनेह निरत जन सहज सहायक॥३५॥
अखिल लोक सत सोक समन वरसत विनोद पन।
युगलानन्य अधार सतत सोहन श्यामल घन॥
रसिक रसाल विसाल ललित लोचन ललकत लषि।
लोभित रहत कुचाल चपलताई सुदूरि रषि॥३६॥

अहोभाग अनुराग लाग जेहि बढ़त जुगल पद।
सो सब विधि विधि सहित सकल सुर अरचित वेहद॥
सखिन समेत सरोज वदन वदनी नवीन वय।
विलसत विपुल विनोद विपिन सद सहस सुमन जय॥३७॥
केलि कला कमनीय मध्य कानन कदंब रचि।
भाविक सुमन सनेह सुधा सब विधि सौगुन सचि॥
दंपति रसिक अनन्य सरस संपति सनेह सर।
अति विचित्र कल केलि कुतुक कामिनी नेह कर॥३८॥
सियवर विमल विहार रसिक हियहार होस हर।
केहि प्रकार सुषसार कहौं अति अज्ञ मंदतर॥
जनकनंदिनी नेह नवल रस रसिक कृपा लहि।
वदत विचित्र विनोद रमन रमनी निदेस गहि॥३९॥
बहुरि विहार विलास विसद हित विमल विहारी।
वृंदावन रस ऐन मैन मन सुमन सुधारी॥
आये सखिन समेत सुरस बरसाये प्याये।
छाये छवि घन छाँह माँह मोहन हरसाये॥४०॥
याही वन की छटा छींट वृंदावन दूजो।
जानो रसिक नरेस सुमन मानो पिय पूजो॥
परमानंद प्रधान देत हिय हेत लेत लषि।
परम ध्यानमय सदन रहस सुष सजत रंग रषि॥४१॥
वृंदा नाम ललाम सहचरी सेवत सुचि वन।
संतत सहित सनेह सुरुचि संपन्न सुवासन॥

हीरा रतन विचित्र विमल वैदूर्य महामनि।
लसत अनेकन रंग खचित भल भूमि प्रभा जनि॥४२॥
अति विस्तार विहार रहस वर्द्धन मंगल महि।
दरसत परसत प्रेम परम प्रगटावत कर गहि॥
नाना कुंज निकुंज सदन सब सरस सँवारे।
तोरन नवल वितान विविधि वानिक छवि धारे॥४३॥
फरस फनूस जलूस एक से एक अधिकतर।
रचना नवल निहारि चकित चित होत हरी हर॥
गिलम गलीचे चारु चांदनी चमक चहूँ दिसि।
नाना रंग विराजमान मनि मानिक अहनिसि॥४४॥
अति उतंग नव रंग रचित प्रासाद परम प्रिय।
चहुँधाँ कोट विचित्र हरत बरवस भाविक हिय॥
मधुर मनोहर महल ललित लावन्य नेह निधि।
कलित किसोर विचित्र भूमिरुह राजत सब विधि॥४५॥
अमल अटारी अधिक सु दुतिकारी प्यारी पिय।
सोभित सोभा सरस दानि दिलवर जीवन जिय॥
अपर अनंत विलास वचन वाहर बहार वर।
रसिक जनन जिय माझ लसत नित नेह सुधा सर॥४६॥
सुमन सोहावन रेनु रमन रंजित अनुरंजन।
बहत विमल रस रंग संग सुष सहित प्रभंजन॥
मन मति गति गुन पार प्रभा भासित अद्भुत वन।
ध्यान धरत हिय हरत भरत नव नेह मधुर मन॥४७॥

मधुव्रत निकर निकुंज मध्य गुंजार करत कल ।
अमित वरन दुति धरन लसहिं द्विज दाम काम छल ॥
तेहि थल अमल विनोद सजत सिय सहित रसिक प्रिय ।
विविधि भाव अनुभाव वलित रस रूप रमन तिय ॥४८॥
सखिन समेत निकेत नेह रचि विविधि विलासं ।
विलसत बाग वहार परम मुद प्रभा प्रकासं ।
प्रान प्रिया मुद मोद देत दिलदार रहस निधि ।
रमत रसिक सिरताज राजनंदन अनेक विधि ॥४९॥
क्रीड़त कुँवर किसोर काम कामिनी केलि कल ।
बरसत विसद विनोद मान माननी मधुर जल ॥
अति अगाध अनवाध आध गुन रहित रहस वर ।
सहज सनेह प्रकास हेतु सत सहस ससीतर ॥५०॥
हरि चंदन चित चाह चारु चंदन नंदन वन ।
विहरत जुगल किसोर ललित दृग कोर सुधा घन ॥
नष सिष नेह तरंग रंग मंडित मन मोहन ।
सरस श्याम घन दाम सुभग दंपति सम सोहन ।५१॥
हरि चंदन वन नवल नाज संजुत सोभित भल ।
छन प्रति छटा कलाप उदित जेहि लषि न लगत पल ॥
सुंदर सरस सुभाय लसत भूरुह विचित्र वर ।
कोटिन कुंज निकुंज केलि कौतुकहि सुहिय हर ॥५२॥
कतहुँ मनोहर मान प्रिया प्रीतम सनेह सुचि ।
कतहुँ गान रसपान तान सुष सान आन रुचि ॥

कतहुँ नवल निर्मोल नेह वर विसद कथन प्रिय।
कतहुं आभरन वसन सजन सज्जन सोहात जिय॥५३॥
कनक कांति कमनीय महा मनिगन मंडित वर।
सोहत सदन अनूप रूप रचना अद्भुत तर॥
अमित रंग रमनीय सुमन सोभित सौरभ सजि।
मधुकर रसिक कदंब प्रान अवलंब सरस भजि॥५४॥
हरित मनिनमय परन सुमन प्रिय प्रीति हरत हिय।
लोनी लता ललाम हेम वल कल विनोद तिय॥
सहज सरस सुकुमार डार द्रुम मधुर अरुन अति।
लसत अनेकन रंग दंग दायक अनग मति॥५५॥
कूजहिं कला निकेत निकर द्विज दुति द्रुम संयुत।
कनक कलित सुविचित्र वरन सोहत उड़ात द्रुत॥
संतत अमल विनोद मोद युत रहत गहत रस।
दंपति छबि प्रतिछाँह छटा लपि रहत रहस बस।५६॥
सषी समूह सनेह सुभग संयुत निपुना नित।
अमल आभरन वसन त्रिविधि भूषित नषसिष प्रत॥
अति विचित्र तर कोककला दर्सावन वारी।
सियवल्लभ सब भाँति प्रान सम परम पियारी॥५७॥
यहि बिधि बृंदा विपिनि विहरि वल्लभ विलास कृत।
रसिक रसाल असाल, हाल हरसायत हिय हुत॥
नवल उमंग सुरंग सहित दंपति सुंदर मनि।
आये अपर विनोद विपिनि मंदार मधुर धनि॥५८॥

परम रम्य आराम रमन रमनी विहार थल ।
सब रितु सुखद सलोन सरस फल फलहिं ललित फल ॥
अमल ब्रह्ममय ज्योति जगमगत जगत प्रकासी ।
परम प्रभाव विचित्र सहज संपति सुपरासी ।५९॥
अखिल अमंगल मथन सरस सिव सतत सजावन ।
विपुल लोक गोलोक कलित कानन सकुचावन ॥
अति अनूप बहु रंग वचन वर वलित द्विजाली ।
षटपद रसिक रसेस रूप सोहत सर साली ॥६०॥
कामद कला निकेत देत अभिलाष लाष विधि ।
कुसमित पुष्पित सतत रहत रस एक रहस निधि ॥
साखा सुचि सुकुमार नमित मधु भार परम प्रिय ।
अवलोकत आनंद नवल दंपति रस वस हिय ॥६१॥
मनिमय महल अनंत रहस रसिकन सुषदायक ।
रतन रचित वर षंभ दंभ दुर्मति दुषहायक ॥
वेदी विमल विचित्र खचित मनि मानिक सोहत ।
परिकर निकर निवास नेह निस दिन मन मोहत ॥६२॥
पदुमराग मनि मधुर रचित सोपान सुभग सर ।
विकसित वनज विनोद वलित सब विधि उदार तर ॥
मधुर मरंद सवाद सरस ग्राही मधुव्रत बहु ।
राजहिं मद उन्मत्त जलज चहुँ पास निकट कहुँ ॥६३॥
सीतल सरस सुगंध सुरुचि सब काल लसत जल ।
जेहि जोहत जिय बीच बचत नहिं मोह मान मल ॥

सुधा स्वाद सकुचात मधुर तम नीर पान करि।
अपर सकल रस निरस सहज अनयास अधिक हरि ॥६४
अमित कलाकर प्रभा हरन हारो अनूप वन।
कलित कामिनी काम कला वरधन मोहन मन ॥
लीला लिंगित लसत ललन लावन्य लहर लय।
प्रिया प्रेम रस लीन मदन मन मान करत जय ॥६५।
रतन रचित रमनीय विमल वेदिका लसत नित।
मनि मानिक अनमोल खचित प्रतिभा विचित्र चित ॥
मंडप मधुर मनोज मान मरदन वरधन रस।
विसद विलास विहार वलित जगमग जीवन जस ॥६६।
महा मनिन प्रतिकास लसत चहुंपास रास रस।
उपमा निषिल निरास लगत लोचन लखि नीरस ॥
प्राकृत पार सुप्यार रहस रस रसिक रमत तहँ।
भासत भवन असेस लेस परपंच न कछु जहँ। ६७॥
सो सुष सदन स्वरूप निरूपन करत लाज उर।
तदपि प्रीति परतंत्र वदहिं रस रमित प्रेम पुर ।
सौरभ सकल सकेलि सतत सोहत विहार थल।
बहत विमल वर वात सुरभि सरसात सहित भल ॥६८॥
सुभग सहचरी गान तान तन भान भुलावन।
पूरित प्रेम प्रधान हृदे पाषान धुलावन ॥
तेहि विनोद वन मध्य अमित विधि करि विहार वर।
दंपति नेह नरेस सरस संपति प्रमोद कर ॥६९॥

प्रीनन परम प्रवीन परस्पर प्यार परम छकि ।
चंद चकोर समान जुगल दृग प्रान रहत जकि ॥
छन छन नवल उमंग परस्पर रंग राग घन ।
चढ़त चौगुनो चाव चाह चामीकर चित तन ॥७०॥
कोटिन क्रीड़ा करत भरत भाविक मंगल मन ।
अनुपम मोद सुमाल मधुर पहिरावत निज जन ॥
ताकन तिरछी तमक तरहदारी तम तारक ।
छाकन जुगल किसोर रंगरस बोर सुधारक ॥७१॥
नील पीत वर वसन सजन सज्जन जन रंजन ।
भूषन दूषन हरन करन मुद भव भय भंजन ॥
मन वच पार विहार हदें समुझत सरसत सुष ।
वदत विपर्यय प्रीति रीति अविनीत द्रोह दुष ॥७२॥
भव्य विभव नव नेह मधुर मादक साधक रस ।
जानहिं रसिक रहस्य सदन महरमी न नीरस ॥
सुनिये सुरस प्रसंग रंग रस सदन अदन दर ।
अपर अनूप विचित्र विपिनि वैभव विहार वर ॥७३॥
कामद केलि कलोल करत हिय हरत होस सब ।
पारिजात वन सघन निरषि दंपति प्रसन्न तब ॥
अगनित मनिमय महल अहर्निसि चहल पहल अति ।
विविधि वितानविचित्र विजितरचना नित रतिपति॥७४
चांरु चांदनी चारु चमक छज्जन प्रति छाजत ।
कलस केलि संकलित महा मनिगन भल भ्राजत ॥

विसद विहार बहार विपुल अति अमल अनूपम।
नवल निकुंजन मध्य मधुर रस रहस सरूपम ॥७५॥
सौज सोहावन सुधासार संपन्न सरस सुचि।
जेहिलपि छकि चित चैन ऐन आनंद बढ़त रुचि॥
नाना मनिगन कलित ललित सद सदन सोहावन।
रतन रचित रमनीय थंभ भासत प्रिय पावन ॥७६॥
सकल भोग गत सोग सतत सोहत सनेह सर।
निषिल मनोरथ सफल सजत सावित सहाय कर॥
मनमथ रति आवेस वेस भीने रसेस रस।
ललित लड़ैती लाल लट्टू लपटे विहार बस ॥७७॥
उज्वल सजल उमंग रंग रस रंगे रमत नित।
झुकत नैन वर वैन रुकत बेसुध तन मन चित॥
उदित मुदित अनुराग चारु चित चंद फंद मन।
प्रसरित विसद उजास रासरस अति प्रमोद घन ॥७८॥
विहरत नवल किशोर चारु चित चोर ओर चहुँ।
प्रान प्रिया करजोरि नटन समगति विहरत कहुँ॥
संतानक वर विपिनि मध्य विहरत विनोद कर।
कुसमित फलित विचित्र एक रसराजत मनहर ॥७९॥
मधुकर निकर निवास मत्त मधुपान अमित करि।
सुंदर शब्द सलोन मधुर बोलत विनोद भरि॥
अति अनूप रस रीति सहित सद गीत प्रीति पर।
गावहिं सषी सनेह साज बाजत विचित्र तर ॥८०॥

महा मधुर मन हरन पीठ लषि दीठ अचल अति।
सुमिरत सरस सवाद सुद्ध सरसत सोहाग रति॥
हास विलास हुलास कास चहुँपास खास सुष।
झलझलात झमकात झलक लषि पलक परत दुष ॥८१॥
बहु विधि विमल विहार प्रिया युत रचि प्रीतम वन।
परिकर हदै हुलास विपुल प्रद छेम प्रेम घन॥
बहुरि अवध आनंद कुंज वीथी विहार वर।
करत केलि कमनीय अपर वन निरषि प्रभाकर ॥८२॥
करि केसर सुभ नाम सघन कानन किसोर कल।
ललित लोनाई लाल लषत जेहि मध्य मधुर भल॥
वन समीप सुचि स्वच्छ सरस सोभित सरजू जल।
दरस परस पय पान करत हिय हरत मोहमल ॥८३॥
सर्वोपर रमनीय परम पावन प्रमोद निधि।
उचरत नाम सनेह सहित आराम विविधि विधि॥
युगल रहस रस भरित नीर निज निरषि सषीगन।
परम प्रमोद विनोद प्रभा रंजित निहाल मन ॥८४॥
प्रवल प्रेम प्रिय धाम माँझ विश्राम पाय अति।
गावन लगीं ललाम ललन रस चरित रमित मति॥
नृत्यहिं नेह निचोल नवल अंगन प्रति पहिरे।
मगन मधुर आनंद सुधा सागर गुन गहिरे ॥८५॥
कामिनि काम प्रकास करन कौतुक कलाप रचि।
सिय वल्लभ निज नेह छकी सौंदर्य सार सचि॥

विपुल अमल वन बीच विभव बहु वलित बाग वर।
मधुर अनूप अजूब सरस वाटिका लसत तर ॥ ८६ ॥
रिषि मुनि सिद्ध सुरेस ईस ब्रह्मादि अलष गति।
पुरुषावेस समेत जीव गन होत न तहँ रति ॥
जौलौं रंचक गंध पुरुषपन चित्त विराजै ;
तौलौं रहस सुधाम माँझ संबंध न भ्राजै ॥८७॥
केवल प्रेम प्रकर्ष हर्ष गुन पार प्रकासक ।
वामा वपु आवेस सहित दरसत दुति लासक।
नित्यानंद निकेत नायिका नेह निवाहन ।
पूरित प्रभा अमंद अमल अनुछन उत्साहन ॥८८॥
रुचिर रास रस सदन मदन मद मलत छलत छल।
रसिक अनन्य अधार रहस मारग हित संबल ॥
सुकृत पुंज कमनीय कला नायक गायक गुन।
कारन नेह निसोत जोत रसराज ध्यान धुन ॥८९॥
उपमा निषिल निरास करन हारो अनूप वन।
जुगलअनन्य उदार रसिकजन कृपा लहत मन ॥
जयति विपुलवन विसद बीच विहरत नवीन वय।
जयति युगल जस सदन वदन सुषमा निसेस जय ॥९०॥
जयति गुनाकर ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता अगम्य नित।
जयति दिवाकर वंस विमल अवतंस चारु चित ॥
जयति जानकीजान प्रान वल्लभ विहार रति।
जयति जुगल जसजाल साल हर ह्वै मधुर मति ॥९१

जय अवधेस किशोर चपल चित चोर नेह निधि।
जयति रसिक रसरंग विविधि वरधन विचित्र विधि ॥
विजयति जुगलअनन्य नेह नूतन प्रबोध कर।
विमल विनोद विलास निरत जै जै सिय रघुवर ॥६२॥

इति श्री रहस निवासे विनोद विलासे रासरसरासे श्री युगलअनन्य सुमति प्रकासे विविधि वन विहार निरूपन नाम द्वितीयोऽध्याय ॥२॥

(~)(~)(~)

* तृतीय अध्याय *

* छंद *

श्री सद्गुरु गुन ऐन सुपद सरसीरुह ध्याई।
बरनों विमल विहार हार उर रसिक सदाई ॥
श्री सहस्र संपन्न सुभग दंपति सनेह तन।
पवन प्रानपति प्रीति परम पावन प्रसन्न मन ॥ १ ॥
पानिप परम प्रसिद्ध एकरस नष सिष राजत।
सकल स्वादु रस सरस सुभग सर वर सम छाजत ॥
अति गंभीर गुनेस ज्ञान रस खान निवासी।
श्री अगस्त्य मुनि भूप रूप रस सिंधु विलासी ॥ २ ॥
जुगल जलज करजोरि सीस पद परसि प्रेम युत।
प्रस्न करी कमनीय साल समनीय सु अद्भुत ॥
महाराज कपिराज साज सुभ सदन वदन वर।
रास रसिक सिरताज नवल तन मदन मान हर ॥ ३ ॥

सुनि सनेह सत सिंधु सरस प्रीतम रहस्य रस ।
अति उमंग उर बीच सहस वीची विनोद बस ॥
श्रीमुख मधुर पियूष वचन रचना मयूष मय ।
सुनत तोष तिल हदै होत नहिं गुन नवीन नय ॥४॥
जिमि कृसानु नहिं तोष लहत बहु हविष असनकरि ।
तिमि मम मन मुद मगन सतत रुचि श्रवन हेत धरि ॥
पलक परत सत कलप सहस दुष दहत श्रवन बिनु ।
रहस सुधा रस सींचि सरस कीजे तापित तनु ॥५॥
जनि विलंब अवलंब प्रान करनीय पाव पल ।
विसद वदन अरविंद चरित चित चैन भनिय भल ॥
सुनि सनेह सत सहित वचन सियलाल प्रान प्रिय ।
कहन लगे रंग रँगे रमन गुनगन हर्षित हिय ।६।
गदगद गिरा गिरेस ज्ञान गुनधाम् धाम हर ।
बोले रसिक नरेस प्रानवल्लभ सनेह तर ॥
अहो भाग अनुराग जाग जिय जुगल जगमगित ।
मुनिवर परम प्रवीन रहस रस लीन रँग रंगित ।७।
धन्य धन्य सब भाँति काँति संकलित हदे तव ।
ललित लाड़िली लाल चरित हित हेत नित्य नव ॥
अति अगाध अनमोल अमल गुन अगम सुगम जिमि ।
लषि अधिकार उदार रसिक वरनहिं विहार तिमि ।८॥
लोह परसमनि परसि सपदि चामीकर दरसत ।
सब प्रकार चित रुच्छ तुच्छ रसिकन मिलि सरसत ।

रसिक सनेही सुद्ध सजाती संग होत जब ।
प्रीतम प्रेम प्रधान पुष्ट पावत प्रकर्ष तब ॥९॥
ताते विविधि उपाय हाय दायक विहाय नित ।
रसिक चरन नव नेह निरत कीजे विसेष चित ॥
मुनिवर रहस रसाल मधुर मुद मंजुल जाल जिय ।
सुनिय श्रवन सुष सहित रहित चंचल चवाव हिय ॥१०॥
श्री सरयू सद रहस सदन सोभा सोहाग सर ।
पावन पुलिन प्रकास रास रस भरित भव्यतर ॥
अमल अनंत अनूप तरल तीषन तरंग अति ।
अमित रंग रमनीय निरषि चौकति विरंचि मति ॥११॥
सरस सोहावन सब्द सुनत सुषसार सजत उर ।
दंपति केलि कलोल फुरत अनयास समन जुर ॥
सीतल स्वाद पियूष मधुरताई गुमान गुन ।
हरत नीर निज नेह नवल पूरित प्रसन्न मन ॥१२॥
दस दिसि कानन कलित ललित भूरुह विचित्रवर ।
सुमन स्वाद संपन्न सरस फल लसत मधुर तर ॥
कनक कलित कमनीय परम पादप प्रकास कर ।
सब संपति संपन्न एकरस रहत भाव भर ॥१३॥
जेहि सुभ सौरभ परसि पूत पवमान प्रान प्रिय ।
पूरित विपुल विनोद निखिल जग मध्य मधुर हिय ॥
सरस सुगंधित सकल भुवन अंतर मारुत कृत ।
सुमन सुभाविक सुभग सुमन सुमनस हुलास हृत ॥१४

चहुँधा रस मदमत्त मधुप डोलहिं बोलहिं बहु।
नृत्यहिं नेह निसोत निरत षगगन कोमल कहुँ॥
अति अद्भुत मृदु मधुर मोहनी मही मनिनमय।
रुचिर निकर कर कलित कलाकर कोटि कांति जय॥१५
कहुँ कंचन मनि भूमि झूमि झमकति चमकति अति।
कमला मूरति मती मनहुँ मनसिज मोहति मति॥
विविधि भाँति चित्राम अधिक अभिराम धाम वर।
लसत एकरस नित्य नवल छल बल निषाद हर॥१६॥
अमित दिनेस निसेस दमक दुति दाम दुरत तकि।
महा मुनिन मन मोद मधुर उमगत छटान छकि॥
युगल अमल कलकेलि उदय बिन जतन होत हिय।
प्रगटत परम प्रकास प्रेम पद पास परम प्रिय।१७॥
अनुदिन अजय अडोल अभय भव भान रहित उर।
सुमिरत सरस सवाद धाम छिति छटा छाँह फुर॥
सहस ससी सत सुधा सुधा कर नीर पीर हर।
मधुर मनोहर सीर सतत सीतल अमोद कर १८॥
धेनु छीर सम स्वच्छ संख दुति वि।जत बाहु बल।
परम पियूष समेत सरद घन सघन सदस जल॥
गौरी गिरा गरूर गौरताई गुमान रति।
रमा मधुर मुक्तेस माल मद दमन नीर दुति॥१९॥
कलित कपूर कतार कुंद कमनीय लजावन।
रसिक अनन्य अनूप अमल मन सदस सुहावन॥

युगल सुजस सम स्वच्छ अच्छ परतच्छ दच्छ छवि ।
उपमा कहत कलंक पंक आतंक लहत कवि ॥२०॥
सब रितु सुपद सुभाव सिद्ध सीतल समेत रुचि ।
चित चौगुन उत्साह चढ़त परसत सरसत सुचि ॥
श्री वसिष्ठजा विसद रसद पथ प्रभा पार मन ।
किमि कवि कहै कलेस कोटि करि सदस अपर वन ॥२१॥
मधुर मरंद अमंद सच्चिदानंद कंद सम ।
वदत विपुल चित बीच बढ़त ब्रीड़ा अमोद त्तम ॥
अति अनमोल अलोल कलाकर कांति कलित नित ।
मनमोहन मनि मुकुट मधुर मानिक चोरन चित ॥२२॥
हीरा रतन अनूप वंसछद मुक्त मनोहर ।
विमल लसत वैदूर्य धूर्य दुति दमकत सोहर ॥
अपर अनेकन रंग महामनि मंडित मृदुतर ।
सोभित सरजू सरित सिरोमनि सुधा भरित वर ॥२३॥
विसद बालुका वृंद मंद कर ससि दिनकर दुति ।
चमचमात चप चौंधि लगत जेहि जोहि चमक छुति ॥
प्रसरति किर्न कतार मार मन मथन पुलिन पर ।
दंपति रहस विहार सदन सौभाग्य सुधा सर ॥२४॥
नवल वधू सम सुभग सरस सरजू स्वरूप लस ।
सिय स्वामिनी सनेह सनी सहचरी रहस बस ॥
वीची विमल दुकूल प्रेम प्रतिकूल मूल मति ।
हरति हृदै आनंद प्रदा निदरति रतिपति रति ॥२५॥

मंजु कंज वर वदन सदन रस मदन मान हर।
नील नलिन सम श्याम नवल निज नैन सरस तर ॥
कुमुद्वती सम स्वच्छ मधुर मुसक्यान प्रान प्रिय।
सरस सेवार समान सुष्ट सुरभित सुकेस तिय ॥२६॥
अपर अनेक सिंगार वसन आभरन लसत तन।
श्री सरजू निज नवल वधू प्यारी प्रीतम मन ॥
चउँ विधि वनज विचित्र विमल विकसित विसेष वर।
सरस सुगंध समेत सहित मधुकर मोहित तर ॥२७॥
कुमुद समुद कमनीय कंज मृदु मंजुल मंडित।
लसत ललित छवि हार हरन हिय प्रिय पथ पंडित ॥
श्री मानसजा सगुन सुजल नित लसत ललन प्रिय।
रैन ऐन चित्त चैन नैन मन देत हरत हिय ॥२८॥
श्री सरजू तट अघट महामनि रचित घाट वर।
लसत सुभग सोपान मान छवि अकथ वचन पर ॥
अमित रंग रमनीय महामनि पान विपुल जहँ।
पद्मराग सेमंत सु कौस्तुभ वंस सुछद तहँ ॥२९॥
मिलित निकर मनिराज प्रभा प्रसरित प्रकास निधि।
मनहुँ अमित अकलंक उदित वर व्योम कला निधि ॥
चिंतामनि सम उपल परसमनि निंदनवारे।
जहँ तहँ आदर रहित विपुल वगरे छवि धारे ॥३०॥
नित्य नवल निज धाम विभव किमि कहौं मंद मति।
गिरजा गिरा गनेस सेष सिव गति सकुचत अति ॥

चातक चतुर चरित्र चारु चकवा सचैन चित ।
सारस सरस सवाम मधुर जलकुक्कुट प्रिय नित ॥३१॥
अपर अनेक विहंगदार संयुत क्रीड़ा रत ।
व्रीड़ा वसन विहाय रमत आनंदित निरतत ॥
बोलहिं वचन विहार वलित सुनि श्रवन सुधा सम ।
लगत जगत जुग चरन चारु निज नेह अछल छम ॥३२॥
कंबुक संबुक सुभग लस्व सब विश्व उजागर ।
सुचि सीपी सद विसद प्रसव मुक्ता गुन आगर ॥
कच्छप भुजग जमात जंतु निज सहज वैर तजि ।
सियवल्लभ संबंध सुभग गहि तान भाव भजि ॥३३॥
परम पियूष समान नीर निज निकट पान करि ।
सहज असंकित ह्वै रहै तन मन भय परिहरि ॥
दंपति प्रेम प्रभाव परस्पर प्रीति प्रनय रत ।
भये सकल जड़ जीव मुक्त समता समेत मत ॥३४॥
चित्र न रसिक अनन्य विस्मरन करहिं रीत जग ।
पगे प्रान तन वचन वारि सब भाँति मधुर मग ॥
प्रति वन वनज विचित्र कुंद मंदार कुसुम कल ।
मधुर मल्लिका माल लसत विकसित प्रमोद थल ॥३५॥
ललित लाड़िली लाल परस्पर प्रेम प्यार पगि ।
कलित कुसुम वन दाम मधुर उर धारि लगन लगि ॥
मनमोहन मुसक्यान मधुर मादक रस राजत ।
सुमन सरस सत कलित कलाकर लषि दृग लाजत ॥३६॥

रूप अनूप अपार मार मनमोहन सोहन ।
दंपति छवि छकि छाँह छटा चहुँ दिसि संदोहन ॥
प्रीतम प्रिया प्रवीन नेह नूतन नवीन नित ।
अमल असल अनवद्य सद्य रसिकेस चोर चित ॥३७॥
श्री सरजू सुभ तीर लगे विहरन विहार वित ।
रूप अनूप अपार कहन कवि कौन सुमति चित ॥
प्रनत जनन पर प्रीति प्रभा बहु विधि प्रकास करि ।
सोहति सरजू सलिल कलिल कलि कोट कतल करि ॥३८
जगत कदंब कषाय हाय हिय हरनि नित्य प्रति ।
महिमा अगम अथाह सतत वरनहिं निर्मल मति ॥
विमल वरन वर वारि सरित सिरमौर मुकुटमनि ।
ह्वै प्रसन्न सब समै दीजिये रति अविहित हनि ॥३९॥
प्रान विमोचन करत जौन जल अमल परसि तव ।
पावत परमानंद सदन अनवद्य नित्य नव ॥
षग मृग कीट कुरंग भृंग मातंग तंग सब ।
परत तरत भवसिंधु पार नहिं लगत कृपा तव ॥४०॥
विधि हरि हर वर भाल नमित प६ गमन करत तहँ ।
रिषि मुनि सिद्ध सुरेस योगि संजुत न जात जहँ ॥
श्री सरजू सुभ सुजस सोहावन वदन ध्यान करि ।
सखिन सहित रस रास सरस उत्साह हृदै धरि ॥४१॥
श्री सरजू सुभ सरित मध्य अनुपम विहार निधि ।
लसत असोक विचित्र वाटिका विसद सकल विधि ॥

दिव्य भव्य अति नव्य प्रभा मंडित पादप प्रिय।
चहूँ पास प्रतिबिंब परत हिय हरत मदन तिय ॥४२॥
संकुल कुसुम अनंत रंग रंजित विगसित वर।
साखा प्रतिफल अमल लसत लखि लोचन मुदतर॥
श्रवत सुधासम सतत सुरस सोहत मोहत मन।
भूरुह वृंद विचित्र किधौं अनुराग मोद घन ॥४३॥
नाना वरन विचित्र डार प्रति लसत विहंगम।
उर उमंग अंग अंग रंग सुंदर तिय संगम॥
मधुव्रत माल मरंद हेत घूमत झूमत झुकि।
पीवत परम पियूष भूप सौगुन सरसत सुकि ॥४४॥
ज्योतिष्मती अनूप महामनि दीपवती नित।
प्रेमप्रदा पिय प्रीति प्रनय संपदा विसद वित॥
ललीलाल सम प्रानप्रिया पावन पराग पट्ठु।
परिकर निकर निहाल रहत नित प्रति अतिसय लट्ठु ॥४५॥
श्री सरजू निज नीर नवल संवलित ललित अति।
राजत रहस रसेस सदन वाटिका विमल रति॥
किधौं कोक कारिका हृदै हारिका मंत्र मनि।
किधौं मोहनी वाम श्याम श्यामा सोहाग सनि ॥४६॥
किधौं कला कमनीय सरस रमनीय लसत कल।
किधौं लाड़ली लाड़ ललित सोभित अद्भुत थल॥
किधौं अमंगल मूल सूल समनी संवित सत।
किधौं परा रति धाम अंतरंगा सुसक्ति मत ॥४७॥

किधौं जानकीजान सान सौंदर्य वर्य वर।
लसत वाटिका व्याज साज सोहन अद्भुत तर॥
सुमति अतर्क विलास बाग वल्लभ विदोद निधि।
सुषमा सहित हमेस वेस सब भाँति सुनिधि सिधि।४८॥
रसिकन जीवन मूरि किधौं सुषमा सर्वस सब।
किधौं कामिनी केलि कलित कारन कसार फब॥
निचय नवल उपमान मानप्रद प्रेम परा पगि।
श्री सहस्र संपन्न विमल वाटिका जगामगि।४९॥
जेहि थल अमल प्रवेस करत बड़भाग पाय जन।
बहुरि न ताकत तृगुन रचित सुषपान प्रान मन॥
अति अनुराग अदाग सरस तरु फल थल प्रापति।
युगल अहेतुक कृपा कोर कमनीय मिलापत्ति।५०॥
गुल्म लता तरु वृंद कंद रस हीर सार इति।
त्वचा चारु रमनीय मधुर मंजुल मोहन मति॥
हरित परन सुरराज महामनि निंदन लायक।
प्रसरति प्रभा अमंद चंद कर निकर सहायक।५१॥
पद्मराग सम कुसुम लसत रस सरस सहित नित।
निरषत नैन सचैन होत सब विधि प्रसन्न चित॥
प्रेमामृत मकरंद मधुर पूरन फल फावित।
केवल रसिक अनन्य परम जीवन धन सावित॥५२॥
प्रीतम प्रिया प्रसाद पाय पावत जन सो फल।
युगलानन्य सनेह स्वाद सौंपत अनूप थल॥

विमल वाटिका विविधि रंग राजत रसाल छवि ।
विसद वेद वर बाग अगोचर किमि कहि सक कवि ।५३॥
जोगी जोग समाधि निरत निसि दिवस एकरस ।
नित्य निकुंज प्रकास रंच आभास लहे जस ॥
मगन रहैं तेहि मध्य निरंतर विश्व भान तजि ।
लहे न निज रस रास रुच्छताई भदेस भजि ॥५४॥
पगे किसोरी लाल ललित लीला पियूष पन ।
तिन कहँ विपुल अयास विगत सुष सुगम अगम धन ॥
ब्रह्म ज्योति संवलित लसत अंतर निकुंज कल ।
परम प्रमोद प्रधान नवल नाजुक निकेत भल ॥५५॥
रहस धाम ते वहिर वसत जो जोति जगमगित ।
तेहि भेदन हित रसिक परम पद रस निवास नित ॥
रस स्वादी रस रहस मरम वेदी विहार वित ।
दंपति सहज सनेह मगन मानस निर्मल चित ॥५६॥
अपर न जाने योग सोग साधन समूह सजि ।
सियवर विसद विलास लहत अधिकार भाव भजि ॥
ब्रह्म ज्योति प्रिय प्रान जानकी जान सान जुत ।
ज्ञाता रसिक नरेस देस वर वेस नेह नुत ।५७॥
संतानक तरु तरहदार गुलजार रास रस ।
अवलोकत आनंद दुरत दुख दोष जाल जस ॥
सुरतरु निखिल निहारि हारिहिय मानत नित प्रति ।
अद्भुत अमल उदार निरूपन जोग न अहिपति ।५८॥

तेहि छवि छटा समेत सरस छाया अंतर वर ।
सोभित सुषमा सदन दिव्य मंडप प्रकासतर ॥
महा मनिनमय माल सुभग तोरन नवीन नित ।
विपुल भाँति वन वेल पेल कारन विचित्र चित ॥५९॥
मनिन रचित कलधौत वसन विरचित वितान बहु ।
लसत एक से एक हदै हारी अनूप कहुँ ॥
सरसत सुमन सुगंध सरस सुरभित गरभित गुन ।
अपर अनेक सुवास धूप धूपित प्रकास पुन ॥६०॥
चिंतामनिमय मधुर महामोहन मनमिज मन ।
पावन परम प्रभाव वलित प्रिय पीठ सुधा घन ॥
अति अनमोल अतोल परम दुति दाम महामनि ।
रचित रंग रमनीय अमित रचना नवीन वनि ॥६१॥
प्रेम परत्व प्रधान प्रकासक पद्म सद्म सुष ।
दीपत दिनकर दिव्य सहस सम समन सकल दुष ॥
चित चष चोरत चपल अचल कारक विचित्र गति ।
निरषि भ्रमित नित होत गिरा गनपति विरंचि मति ॥६२
तापर परम प्रकास कलित कोमल उज्वल वर ।
लसत वसन बहुरंग रतन रंजित विचित्र तर ॥
सरस सुमन संपन्न सेज सौभाग्य सार सत ।
निदरत नित नवनीति प्रीत वरधन विलास रत ॥६३॥
तरहदार मन हरन वलित वर वेलि मधुर तर ।
उपवरहन निज गोल मोल मन लेत रसिक वर ॥

अगनित सौज समीप सतत सोभित रस सागर।
प्रीतम महल महान मोददायक गुन आगर ।६४॥
ललित वसन आभरन सहित दंपति राजत तहँ।
प्रभा पुंज कल कुंज मध्य करनिका कलित जहँ॥
लली लाल मुद माल मधुर उर धारि परस्पर।
विह्वल विसद विनोद छके सब भाँति कांतिकर ॥६५॥
दंपति नैन सुसैन लेस रुप पाय लोक बहु।
उपजत विनसत लसत विदित नहिं गोप बात कहुँ॥
महा संभु सतकोटि ब्रह्म सत सहस अपरमित।
महा विस्नु सत पदुम होय संभव अविलंबित ॥६६॥
श्री सियवर परमेस विभव लवलेस अंस गहि।
अवतारी अवतार विपुल जुग प्रति निदेस लहि॥
असंख्यात ब्रह्मांड माँझ बहुविधि विधि हरि हर।
बसत सीस निज सवल धारि आयसु सेवन पर ॥६७॥
सकल ईस सिरताज राज राजेस सियावर।
समुझे सरस सचेत बैन सुख ऐन हिया हर॥
करै तर्क मति मंद द्वंद दारुन दवेस दहि।
श्री सीतावर विमुख नीच नर नाकिस संग गहि ॥६८॥
कर जोरे बहुरूप धरे अवतार द्वार नित।
चोपदार सम लसत न कछु कीजे संसय चित॥
रामनाम अभिराम परम वैभव विलसत सत।
नारायन श्री कृस्न प्रमुख ईसन उर सरसत ॥६९॥

अपर कीट कलिकाल ग्रसित मन मलिन मोहमय।
जिनके हृदै हमेस अज्ञा राजति कीन्हें जय ॥
अमित चरित रस भरित यदपि पांवर नर जानहिं।
महामोह मद पान किये सठ तदपि न मानहि ॥७०॥
जिते मुनीस रिषीस तितैं श्रीराम उपासक।
यामें संक न रंच रंक संदेह विनासक ॥
महा मधुर रस रहस सरस सुचि सुधा स्वादु सत।
सुनिये श्रवन लगाय कुंभ संभव सनेह मत ॥७१॥
रमत रसिक सिरताज राज रसराज रूप प्रिय।
प्रिया प्रेम परतंत्र मंत्र मोहनी सहित हिय ॥
सखी सलोनी सहस रमा रति रूप विनिंदनि।
चहूँ पास सजि सरस नेह निर्मल अभिनंदनि ॥७२॥
परतम प्रेम निवास रास रस अवध विहारी।
अनवधि केलि कलोल कामिनी कलित सँवारी ॥
हास विलास प्रकास विपुल रचि प्रान पियारी।
रिझवत लाल रसाल प्रानवल्लभ सुकुमारी ॥७३॥
निज मन मधुर सुदेस मध्य प्रीतम विचार करि।
प्रगटायो प्रतिबिंब प्रेम अनुपम मनोज हरि ॥
प्राकृत मदन अजोग सोग संकुल न जोग तहँ।
केवल नेह निसोत नवल दंपति राजत जहँ।७४॥
अमित मदन सम सुभग अंग रति रमन सहित तिय।
सोभित भयो विचित्र हृदे हारी असेष प्रिय ॥

दृढ़ व्रत नेम निसेस अंक दायक असंक मन।
मोहन निषिल जहान मान मरदत महान जन ॥७५॥
कुसुम कलित कर चांप सुगुन मंडित प्रकास कर।
संमोहन सुस्तंभ प्रमुख अति सजल निसित सर॥
दुर्निवार दुर्द्धर्ष हर्ष वरधन उमंग जुत।
सुंदरता रस सिंधु रंग दिल देत दमक द्रुत ॥७६॥
ललित ललन मृदु मधुर सुमन मोहन मनोज करि।
सियवर नवल निदेस सीस सब भाँति मदन धरि॥
कलित कंज दृग कोर निरषि दंपति विहार विद।
हाव भाव संकलित रहस रतिपति कृत कोविद ॥७७॥
सहज स्वतंत्र स्वरूप भूप नंदन अभिनंदन।
प्रेम सदन मन मदन मोदप्रद श्रीरघुनंदन॥
रास रमन चित चाह चतुर चूड़ामनि उर धरि।
विपुल वाम अभिराम सहित सुचि तोष काम करि ॥७८॥
श्री रघुवर जस स्वच्छ सिंधु सुष सिंधु सुधाकर।
प्रिया प्रीति प्रतिबिंब विवस अनवद्य अंक हर॥
प्रीतम परम प्रमोद रमन अभिलाष हृदै गुनि।
यूथेश्वरी समाज सरस वंदित सद पद पुनि ॥७९॥
अमल मनोरथ सहित प्रिया प्रीतम विनोद हित।
प्रगटाई वर वाम अष्टदस। सहस सुभग नित॥
अष्टोत्तर सत अधिक झलक अंगन प्रति अविचल॥
अगनित उड़गनराज प्रभा सम कांति लसत कल ॥८०॥

रतन रचित रमनीय चारु कंचनमनि भूषन ।
नष सिष विमल विहार रंग पूरित हत दूषन ॥
नव किसोर वर वयस विसद रति रमन सरस रुचि ।
परतम प्रेम प्रकास आस संपन्न सुमन सुचि ॥८१॥
रूप अनूप विचित्र चमक जौवन जलूस जस ।
मधुर मनोहर माल लसन लावन्य ललित रस ॥
कंज मधुप मृग मीन छीन रस लीन नैन लषि ।
वन अंतर दुरि देह मान आमर्ष हृदै रषि ॥८२॥
असंख्येय गुण दिव्य भव्य मंडिता एकरस ।
लली लाल अनुकूल रहस वस सतत सुभग जस ॥
रति नायक सत शास्त्र सरस मधि अधिक विसारद ।
महिमा अगम अथाह सुमति वरनत नित सारद ॥८३॥
दंपति प्रेम परत्व परम पतिव्रत प्रकाशिका ।
अमल केलि कमनीय सुमन वरवस विकासिका ॥
रैन ऐन रस ऐन युगल जस सुधा सनी सब ।
मम मतिगति सब भाँति निरूपन करत जाति दब ॥८४॥
सरस सरोरुह सुरभि सहित तन अनुपम कोई ।
मधुर मालती सदस अंग निरखत सुष होई ॥
कलित केतकी कुसुम मल्लिका सम सोहत तन ।
गुलसन नवल गुलाब आब आमोद हरन मन ॥८५॥
विपुल सुगंध समेत लसत सब सखी सयानी ।
उपमा निखिल निरस्त अधिक वीरस अनुमानी ॥

रहस रसिक मद मधुर पान संजुत दृग घूमत।
नील अरुन सित रंग दंग प्रतिपल चप चूमत ॥८६॥
विपुल वरन रमनीय सहित सहचरी यूथ गन।
निदरहिं कनक कठोर चमक चंपा संपा तन ॥
कोट कहत चित छोट ओट जिन लही खोट खल।
अमित न संख्या जोग जूथ आली असोग भल ॥८७॥
अष्टोत्तर सत महा मुख्य माधुरी मगन मन।
यूथेश्वरी प्रधान प्राण प्रीतम प्रमोद तन ॥
एक एक सहचरी संग सत सहस दासिगन।
संतत सुचि सुकुमारि सरस सेवा तत्पर मन ॥८८॥
निरषि नेह निधि नैन नाजनी निखिल नारि नव।
अति उत्कंठित हृदै भये भाविक भावन भव ॥
निज स्वरूप अनुरूप परम आभरन विभूषित।
प्रगटाये प्रतिबिंब विमल प्रिय पुरुष अदूषित ॥८६॥
मंद मधुर मुसक्यान चपल चितवन रोचक चित।
नष सिष नेह निकेत नरम वर वैस ऐस वित ॥
कलित काम कुल कांति कला पंडित मंडित गुन।
रसास्वाद संपन्न सतत संघटित रहित घुन ॥६०॥
अमित विभाकर तेज तरुन हारी किरीट कल।
कुंडल लोल कपोल लसत लावन्य ललित थल ॥
नष सिष वसन विचित्र आभरन हरन हृदै हरि।
अति उज्वल नव कांति प्रेम पूरित प्रकास करि ॥६१॥

सियवल्लभ सम रूप मनहुँ रस भूप त्रिपुल तन ।
प्रगट प्रीति रस रीति करन दंपति सनेह घन ।।
सहचर श्री रघुवंस विभूषन विपिनि विलोकी ।
मधुर मनोरम मोद सदन अनवद्य असोकी ।।६२।।
रति नायक सर त्रिषम विद्ध विह्वल विनोद मय ।
भये सहित उत्साह चाह चौगुन विचित्र चय ।।
महामत्त मृदु वैन नैन नव घूमन लागे ।
सम स्वरूप सब राजकुँवर उज्वल रस रागे ।।६३।।
जै श्री युगल किसोर रहस सागर हलोर हिय ।।
जयति रसिक सिरमौर मौर मंजरी मधुर प्रिय ।।
जयति प्रकासक सरस सहज संबंध बंध हर ।
जयति अमल आनंद कंद सच्चिदानंद तर ।।६४।।
विधु वदनी वर वदन सुधा मधुव्रत विलास जय ।
अषिल अमोघ अनंत अमित गुन केलि कलित नय ।।
नव नीरद सम श्याम राम रसधाम नाम जय ।
जयति विविधि रति रंग जंग जीतन सुसीलमय ।।६५।।
सिय स्वामिनी समेत नवल नागर विहार वर ।
युगल अनन्य अधार रसिक विजयति प्रमोद कर ।।
श्री दसस्यंदन सुवन भुवन भूषन चरित्र चषि ।
श्री अगस्त्य मुनिवर्य मर्य सम ज्ञान जोग लषि ।।६६।।
पगे पवन सुत वचन सुधा माधुरी एक रस ।
सुधि बुधि तन मन त्यागि पागि जीवन रहस्य जस ।।

युगल किसोर रहस्य राग रंजित दोऊ जन ।
समता देन न जोग अपर जगतीतल तन मन ॥९७॥
सकल सुधा सुष सार चरित सिय श्याम सुहावन ।
गावत परम प्रमोद बढ़त रस एक मुँहावन ॥
नवल नेह निज निरत जनन जीवन जमीन सम ।
सुनत श्रवन उत्साह सहित हित होत अहित कम ॥९८॥
विविधि विभव बलिहार कीजिये सुजस जाल लषि ।
होय रहो बेहोस तोषतर मानि रंग रषि ॥
यातें अपर विनोद मोद मन देत न रंचक ।
केवल कथन कषाय करें नाहक ही वंचक ॥९९॥
श्री सीतावर रूप माधुरी छक्यो न जो नर ।
जानो तिन्हैं विसेष क्रूर कायर कलिमल खर ॥
बार बार चितलाय चाय संजुत सनेह सर ।
हूजे सदा सुलीन दीन दारिद दवार दर ॥१००॥
रंचक रहे न सेष सुजस गावत प्रकास सुचि ।
अनायास दुख दूरि पूरि परमेस सुभग रुचि ॥
इष्ट मनोहर मिष्ट सुजस सरसीरुह सोहन ।
मधुकर सम मन अमन होय सेइये सुमोहन ॥१०१॥
वृथा विविधि वन विषम बीच विहरत अबूझ मन ।
रमत नहीं मन हरन विपिनि आनंद मोद घन ॥
सीतावल्लभ ललित चरित चिंतामनि मोहन ।
कीजे सतत विचार प्यार प्रिय लाय सचोहन ॥१०२॥

श्री सरजू तट बीच वास सजिये तजिये जग।
याही में कुसलात मोद मंगल अनूप मग॥
श्री सीतावर स्वच्छ सुजस गाइये एक रस।
युगलानन्य प्रयास विना दंपति कीजे वस॥१०३॥

इति श्री विनोद विलासे परम रासरस प्रकासे श्रीयुगल विहार वर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

(~)(~)(~)

* चतुर्थ अध्याय *

नीरस नीरधि निखिल नेह नासन नवीन मन।
प्रीतम प्रेम परत्व प्रभा संपन्न सरस तन॥
युगल रहस रस मत्त महा मुनिवर वंदित पद।
श्री सियवर जस सुधा कुंभ संभव सुसील सद॥ १॥
बोले वचन विहार रमन रस रचन नेह जुत।
महावीर रस रास रंग रंजित रहस्य रुत॥
श्रवन विना वर वैन परम पीयूष औन प्रिय।
सूखत रहस निकेत सरस भूरुह सम मम हिय॥ २॥
तलफत करन विचित्र चरित हिय हरन श्रवन बिन।
कीजे पूरन प्रेम आस करुना करि यहि छिन॥
महाभाग अनुराग बाग वर्द्धन सोहाग जस।
पलक परत परत्यच्छ कलप लागत विन नव रस॥ ३॥

तिहि हित तजि सु विलंब आन अवलंब रहस वर।
वेगि विमल वर वचन वदन वर वद वेदन हर ॥
सुनि सनेह संकलित विमल वानी विनीत तर।
गदन लगे गुन गरक ज्ञान रसखान प्रेम पर ॥ ४ ॥
श्री सियरमन विहार हार धारी हमेश हिय।
रसिक सिरोमनि पवन प्रान छवि खान परम प्रिय ॥
मुनि नायक आनंद सुधा सागर विनोद रस।
सुनिये श्रवन सुचित चित्त मन मति करि निज वस ॥५॥
उज्वल जुगल विहार विपिनि संचार प्यार पट।
पहिरें रसिक रसाल सतत दंपति रसलंपट ॥
कुहू कुहू नवनेह निरत निज नाद नाज जुत।
मुहूमुहू रस रसिक नटन नित नर्म सर्म सुत ॥ ६ ॥
ललित रसाल विशाल विपुल नव अंकुर मंडित।
तिन पर नटहिं नवीन सुरव पिक प्रिय रस पंडित ॥
अति उन्मत्त विचित्र कोकिला कलन करहिं कल।
प्रीतम प्रिया सनेह सरस कूजहिं निकुंज थल ॥७॥
मधुर मयूर महान महामद मति गति छाकी।
नृत्यहिं चहुँदिसि सरस सुहावन छविवर बाँकी ॥
सुक सारिका अमोल मधुर वानी गुन गावैं।
ललीलाल कल केलि सुनत सौगुन सुप पावैं ॥ ८ ॥
अपर विहंग विचित्र. चित्र ग्रीवादिक सुंदर।
.निज आनन वर वाद्य बजावहिं गुनगन मंदिर ॥

अद्भुत लोक अलोक अमित मृग मन गवादि बहु।
विह्वल दशा विदेह असन नहिं गहहिं वदन कहुँ ॥९॥
रास रसिक सिरताज परम अनुपम प्रभाव लहि।
अर्द्ध असन करि त्याग अर्द्ध लघु भाग असन गहि॥
ऊरध मुष निमि सदन हीन चहुं ओर पशूगन।
श्रवन विषान उठाय रहे यकटक अबोल बन ॥१०॥
निज नैनन तें नीर विंदु बरसहिं विनोद भरि।
पुलकित तनु तरु पनस मनहुं राजत बहु वपु धरि॥
मानस सहित विलीन तत्त्व इन्द्री रहस्य मधि।
कहो कौन विधि होय तिन्हें तन मन की सुधि बुधि॥११
सियवल्लभ रसरास रहस अनुपम अवलोकत।
जोगी समता गही सकल भोगी विदेह गत॥
विवर बीच तें निसरि नेह नद लीन मीन जिमि।
अर्द्ध देह करि बहिर बहुरि वपु भानन कछु तिमि॥१२॥
वदन वमत बहु भेक तदपि नहिं असन बिसरि तन।
तदाकारता रहस विभव वैचित्र अहीगन॥
संसय रती न लेस देस इह अति अनूप तर।
लागी जन जब होय लहे सो दसा अजब वर।१३॥
सिय सनेह संपन्न जौन वामा विचित्र गति।
अति अभेद तिन जानु संग श्यामा न भेद मति॥
जनक किशोरी विभव वाम वरनी पूरवहीं।
तिनहीं के सह रमत रास रसिकेश्वर अवहीं॥१४॥

अपर नायिका रमन जानकीरमन न फावित ।
सखी समूह विशेष तत्सुषी स्वाद विभावित ॥
हठ वस स्वसुष प्रधान करहिं जे बिना विचारे ।
तिनहिं न मोद विनोद जुगल संपति बिनु धारे ॥१५॥
जे भल भाविक भव्य निकर रस निधि अवगाहीं ।
तिनकहँ तत्सुष सतत सुरुचि सब विधि छवि चाहीं ॥
काचित कामिनि कलित केहरी कटि कमनीया ।
माला मधुर समान रसिक प्रिय उर रमनीया ॥१६॥
वसति कंठ मधि मान माधुरी सहित वाम वर ।
रूपवती गुनवती सतत प्रीतम सुष ततपर ॥
सघन श्याम घन मध्य लसति चपला सम कोई ।
अति चंचला विचित्र भाव वल्लभ रस भोई ॥१७॥
नवल नीरधर मधुर माँझ प्यारी संपासम ।
किधौं नील नगबीच लसी रेखा कंचन रम ॥
किधौं सरस रसराज संग नवला अलबेली ।
किधौं विमल राकेस ललित लेखा छवि केली ॥१८॥
काचित रामा रति गुमान मद मान भंजनी ।
अति रमनीय सुवेष साजि पिय चित्त रंजनी ॥
कामातुरा कलंक विगत विधु बिंबित वदनी ।
कोककला कल कुशल दमक दाड़िम दुति रदनी ॥१६॥
सा सुंदरी विहार विमल वर वदन लाल प्रिय ।
चुंबन करि कमनीय कला संजुत विचित्र हिय ॥

मनहुँ मनोहर चंद चारु प्रति प्रिय पियूष हित ।
जाँचत चतुर चकोर किधौं नायिका नेह चित । २० ॥
किधौं अमल मकरंद हेत ढिग कंज मंजु तर ।
लसत रशिक रितुराज प्रिया प्रीतम प्रीनन पर ॥
छैल सिरोमनि रशिक प्रानवल्लभ रस रूपी ।
जुगल सु भुज रमनीय प्रिया कलकंठ निरूपी ॥२१॥
कलित कामिनी ग्रीव सीव सुख स्वाद अनुच्छन ।
लसत बाहु अनमोल आभरन वलित प्रेम घन ॥
उपमा कवि मति हेरि वदति अनुपम विचित्र पुनि ।
मनहुँ हेमगिरि मध्य अचल रविजा सुधार धुनि ॥२२॥
किधौं सुरसरी बीच विमल रसराज धार धँसि ।
देत अमल आमोद चारु चष चहि संतत लसि ॥
सुंदर सरस विचित्र वपुष मोहन मनोज मन ।
मधुर मोर कलकंठ प्रभाहारी अनूप घन ॥२३॥
इन्द्र नीलमनि तरु तमाल दुति दाम हरत तन ।
नव नितंबनी मध्य लसत नागर नटवर घन ॥
कंचन लता ललाम अमित आवृत प्रमोद तरु ।
प्रति वन वपु प्रतिबिंब परत प्रतिकास परस्परु ॥२४॥
जहँ तहँ कुंज निकेत सहित संकेत कामिनी ।
लसहिं सरस घनश्याम हेत जनु अमित दामिनी ॥
कामाकुला कदंब कला कुसला नवीन वय ।
नवल ललन मुषचंद माधुरी पगीं प्रेममय ॥२५॥

निरषति नेह निकेत नैन निज लाय एक टक ।
ह्रिया न किंचिद्वदति मधुर मुग्धा मिजाज सक ॥
सुकर कंज कमनीय न्यास करिके विचित्र विधि ।
प्रीतम मन वसकरन मंत्र मनु पठति प्रेम निधि ॥२६॥
काचित वाला विसद लसत रस रमन निकुंजे ।
विविधि विलास प्रकास प्रीति पद नव रस पुंजे ॥
प्रमुद प्रसन्न समेत करति रस निधि आलिंगन ।
आनन चारु विलोकि चमकि चुंबति प्रिय अंगन ॥२७॥
मंद मधुर मुसक्याय गाय नव तान कटीली ।
नव नायक मनि कंठ लगी रस रंग रंगीली ॥
श्री रघुकुल कल कुमुद प्रकासक चंद कंद रस ।
वामा वदन विलोकि विहँसि विस्मित विनोद वस ।२८
सरद रसिक राकेस सदस मुख मधुर निहारी ।
परम प्रकास निवास समुझि चित अवध विहारी ॥
चुम्मन चमन विहाय रमन रस रतन जौहरी ।
रमाभास अध्यास धारि दिल विमल व्योहरी ॥२६।
रसिकराज सिरताज ललित अंतर वराननी ।
विलसत विसद विहार कुहूँ निसि चंद चांदनी ॥
कतहुं रास रस रसिक सखिन के बीच विराजत ।
मनहुं नीरधर नवल अमल उड़गन मधि छाजत ॥३०॥
सियमुख चंद चकोर कला निधि १.तहुँ अपर विधि ।
रचत रहस रमनीय जुगल सहचरी मधुर मधि ॥

सुर नर किन्नर नाग वंस अवतंस नागरी।
सकल कला गुन भव्य मंडिता जस उजागरी॥३१॥
निज चंचल चितचोर वसन तन लसन कसन कल।
जासु प्रभा लवलेस पाय आभा प्रकास थल॥
नेह भरी नागरी नवल नागर निज कर गहि।
नृत्यहिं सुचि सुंदरी मंद मुसक्यान सहित रहि॥३२॥
अति अद्भुत बहु भाव हाव गति तान गने तनि।
आलिगन अगुन अनंद मंद सबविधि मनमधि गुनि॥
छिति अंतर कहुँ व्योम बीच नागरी नवीनी।
नटहिं अनेक विधान विपुल गुणगान प्रवीनी॥३३।
अति विचित्र चंचला चारु गति लषि न परत दृग।
सरस समीर द्विजेस वारिये चपल सुमन मृग॥
सिथिल अंग नव रंग नटन श्रम सहित सखी सब।
मधुर मल्लिका कुसुम कलित कुंतल निपतित तब।३४॥
सुमन परन सुभ समय सरस सुषमा उपमा कवि।
वदत मधुर जीमूत मधुर मुक्ता बरसत फवि॥
नव किशोर रस रंग रसिक छवि जोर सोर जग।
ललित लोल पद पानि चारु चष चलन मधुर मृग॥३५॥
मृदु मोहन मुसक्यान प्रान जीवन रसज्ञ जन।
नीरसता हिय हरन मनहुँ वसकरन मंत्र मन॥
कंकन नवल पवित्र मधुर मंजीर चपल प्रिय।
महामोद प्रद ववनत कामिनी मान हनत हिय।३६॥

कुंडल कलित कपोल कांति कमनीय परस्पर।
मिलित मनोहर मोद देत रसिकन उर अंतर ॥
करिवर मनि हिय हार मार मद विभव विभंजन।
रसिक अनन्य उदार हृदै सबविधि अनुरंजन ॥३७॥
रतनारे नितनैन कलित कजरारे प्यारे।
परिकर निकर अधार प्यार पन पूरन वारे ॥
सजल सान संपन्न सहज सोहन मन मोहन।
राजत चितवन नेह सदन मृदु मुद संदोहन ।३८॥
वारक लखत अचेत चेत चौगुन सचेत चित।
संतत रसिक उदार सगुन उद्योत होत हित ॥
अधर मधुर प्रिय वचन रचन पीयूष मानमथि।
अरुन विसद वर वरन नेह निधि रसिक प्रेम पथि ॥३६॥
नाजुक नेह निकेत नवल नासा निहारि दृग।
तिल तरकस सुक अरस अखिल उपमा न कहत धृग ॥
पेंचदार छबिदार सदा दिलदार दाम दिल।
जुलुफ जहान जलूम सदन कलकांत कुसुम मिल ॥४०॥
सौरभ सकल सकेलि मदन सौंप्यो सुकेस थल।
चमकत चारु चरित्र चाहि चप चौंधि लगत भल ॥
दिव्य भव्य कमनीय आभरन भाल मधुर तर।
समै समै अनुकूल सुलहारी वियोग गर ॥४१॥
अंग अंग पर बहु अनंग वारिये उचित नित।
मन वानी गति पार रूप रसिकेस वेस वित ॥

अमित विभूषन लसन सु तन किमि जाय बषाने ।
जानहिं रसिक रसेस भाव सुष सिंधु समाने ॥४२॥
अति अनूप माधुरी सहित श्री अवधविहारी ।
सरस सहचरिन सहित मधुर मंगल मुदकारी ॥
दिये सुभुज रसखान प्रान प्यारी सुकंठ कुच ।
विह्वल प्रिया सनेह देह विस्मरन सकल सुच ॥४३॥
नट नायक वर वेस साज सजि सजन स्वजन हित ।
ललित लाड़लीलाड़ निरत लालन विलोल चित ॥
रसिक मौलि मनिमाल भजै भाविक विनोद निधि ।
नवल नीरधर नलिन नीर निंदीकृत सब विधि ।४४॥
अनुपम अति रमनीय मधुर घन सजल श्याम तन ।
वाम भाग अनुराग निचय वरधन नेही मन ॥
ललित लाड़ली लता हेम दामिनी दाम दुति ।
अमित रमा रति रूप निछावर नख प्रकास प्रति ।४५॥
सारी सबुज सनेह सजन संजुत सोहाग सर ।
मधुर महा मनि मुक्त माल मंडिता चित्र तर ॥
लसत ललित तन बीच मनहुँ रसराज वीचिवर ।
किधौं प्रेम निधि प्रेम प्रभा राजत अजूब तर ॥४६॥
किधौं अमित दुति तड़ित सहित सुचि मेहमाल घन ।
किधौं श्यामता श्याम सिमिटि छाई सुगौर तन ॥
किधौं माननी मान मधुर वर वसन ब्याज रचि ।
वसत विमलवपु बीच विशद वल्लभ सनेह सचि ॥४७॥

कलित कंचुकी चारु चटक नव रंग रंगीली।
कसन कला कमनीय रमनं रमनीय रसीली॥
कवि मति गति नहिं लेस लहत उपमा न विचारत।
इन समान सब भाँति यही उर अंतर धारत ॥४८॥
सरस सजीले केस सहित सीमंत वेस वर।
मानिक मुक्ता मधुर असित सित लसत चित्रतर॥
चूड़ामनि मृदु मोद मदन मोहन मानस प्रद।
विलसत विमल विनोद चिकुर रससदन सहित सद॥४९
अमित अमल आभरन भाल भासित प्रकास कर।
बेंदी बेंदी बिंदु दमक चय चंद चमक कर॥
तिलक झलक लषि ललन परत नहिं पलक पावपल।
रंजित रचन विचित्र सतत भासत भाविक भल॥५०॥
भाल विसाल समीप सरस सिंदूर बिंदु वर।
मनहुँ अमल अनुराग सिमिटि सोहत विभात तर॥
वदन सदन सौंदर्य वर्य विधु विमल विनिंदन।
चतुर चकोर किसोर चारु चितचष अभिनन्दन॥५१॥
मृदुल माधुरी मोद मधुर मकरंद पूर प्रिय।
मुख मयंक गत अंक संक सरसत रसज्ञ हिय॥
नैन अैन रस चैन दैन सुख सैन पैन पन।
अरुन असित सित प्रभा कंज मृदु मंजु हरन मन॥५२॥
कजरारे कमनीय ललित चितवन समेत सुचि।
प्रीतम प्रीति प्रकाम करन प्रतिपल वरधन रुचि॥

सरस सिंगार निवास नवल नाजुक रहस्य वन।
बरसत विमल विनोद संकलित अकि स्यामलघन ॥५३॥
किधौं चपल चितचोर चतुर चित किधौं चमत्कृत।
किधौं कोक कमनीय कलाकल कुशल संस्कृत॥
किधौं रंगीली रमा कंज करकंज मंजु तर।
किधौं मधुर मृग मोद किधौं खंजन विचित्रवर ॥५४॥
किधौं मदन मद मीन लीन सुषमा सरसिज सर।
किधौं कामिनी केलि कलित कारन रहस्यतर॥
अद्भुत अमल अनूप न कछु उपमा न सु फावित।
कवि मति चपला देति तदपि उपमा अविभावित ॥५५॥
भव्य भौंह वानैत भवन मनु मधुप रसिक जस।
सौंह सजत सुष सिंधु किधौं वर बंधु विसद रस॥
पलक पद्मसुभ स्याम सरस द्विज रहस पच्छ किल।
किधौं मधुर मनि असित तार राजत रसेस मिल॥५६॥
मंजु मधुर मकरंद सदन मृदु अधर अरुन अति।
जपा कुसुम फलबिंब विसद विद्रुम मोहन मति॥
सुधा सरोवर सतत स्याम मन मगन हेत अकि।
सहस स्वाद सतसीम रसिक नागर चुंबत चकि॥५७॥
रसना रस जस खानि दानि रस निधि सवाद सुचि।
कोमल कलित कलोल करति अनवद्य यथारुचि॥
अमल अरुन अनमोल वरन वानी विचित्र तर।
सुधा नाद रसवीन कलित कल कंठ विजित वर ॥५८॥

बरनत केह विधि धाम मंजु नासिका स्वच्छ छवि।
सुक चहुव लित तुव आनित उपमा वारहि कवि॥
केसर तिलक सहार मधुर मुक्तामनि मंडित।
डोलत अधिक अमोल मोल मन लेत सु पंडित॥५९॥
लटकत ललित ललाम लहरदारी विचित्र तर।
ओरत छब छिल बंद करत हिय भरत भाव भर॥
बरनत अगोचर चारु चलत केहि रीति कहे कवि।
सजत विपुल उत्साह तदपि सकुचात सुमति दवि॥६०॥
दाड़िम कुलि वर तड़ित हुलत दिल दरत रदन लखि।
अति विचित्र रमनीय ललित राजी सोहाग सखि॥
स्रवन कुसुम ताटंक अंकहारी असंक नित।
चमकत चिलित कपोल कांति कमनीय चारु चित॥६१॥
नाना भांतिन जरावदार भूषन अनगन तहँ।
नाना भांत कुसुम मोद कुद मूल लसत जहँ॥
स्रवन सोहावन सोन छोभकारी नायक मनि।
निरखत निसिदिन नेह नहे मानत सब विधि धनि॥६२॥
मधुर मनोहर मदन मान मरदन कपोल छवि।
गोरी चिकन सुरंग गल्ल झलकत प्रति फल फवि॥
ग्रीव चिकन सुख सीव लखत आभा अनूप अति।
मोत क्षेम त्रिविद्य बोल श्रेन अद्भुत रावत अति॥६३॥
चंपकली कंठिमाल मधुर तारेत दान बहु।
दुलरी तिलरी चौलरी सोहत समधिक कहुँ॥

नव ग्रह रतन सुमाल मध्य मृदु मधुर पदिक प्रिय ।
सोहत मोहत मनहिं मोद नित देत सुजन हिय ॥६४॥
अपर आभरन अमित सरस सुभ समय सोहावन ।
सिय पिय हिय हर लेत सतत मोहन मन भावन ॥
कलित कंज कमनीय सुकर सुर तरु गुन निंदक ।
अमल आंगुली पोर आभरन मिलित अनिंदक ॥६५॥
करतल मेहदी मधुर रंग रमनीय विराजत ।
चित्र विचित्र सँवारि सहचरी छकि छवि छाजत ॥
पहुँची वलय विनोद वलित कंकन अजूब जित ।
विविधि रंग मनि चारु चमक चूरी चपेट चित ॥६६॥
सुंदर सदरस सदन सुभुज प्यारी प्रसन्न अति ।
अंगदादि आभरन सहित सोहत मोहत मति ॥
वल्लभ प्रान अधार किसोरी वाहु विसद वर ।
अनुछन निरषत नैन मैन मन मोहन छवितर ।६७॥
कनक कलस कमनीय केलि कंदुक श्री फल प्रिय ।
अमल उरोज सरोज कलित कुंकुम विचित्र हिय ॥
उन्नत कलित कठोर रंग रस बोर जोर जस ।
जानत रसिक रसाल लाल सुख स्वाद साद रस ।६८॥
उदर नाभि गंभीर धीर रघुवीर रसिक हित ।
ललित लहर रमनीय लसत त्रिवली विहार वित ॥
रोमराजि रस रहस रमन राजी भ्राजी भल ।
किधौं श्याम सुचि केस परी प्रतिबिंब रसल थल ॥६९॥

केहरि कला प्रवीन निछावर कटि सुघटित पर।
अति सूच्छम रस रूप लाल मन मोद मधुर कर॥
चलन समै बल परत सम्हारहिं सखी सयानी।
प्रीतम दृग तरसात ललकि ललसात अमानी॥७०॥
रसना रसी रहस्य कसी करधनी घनी रव।
भूषन दूषन हीन लसन कटि जान देत शव॥
नवल नितंब सुचक्र चारु चित चोरन हारो।
वचन अगोचर ललित ललन तन मन धन सारो॥७१॥
जंघ जुगल जगमगित कलभ करिवर कर सुंदर।
किधौं अमंगल मथन थंभ कदली मुद मंदर।
जानु जनकजा जुग्म सघन सुषसार अनूपम।
मधुर मार मृदु मनहुँ विमल वेलन छवि रूपम॥७२॥
गौर गुल्फ गुन गूढ़ मूढ़ मन रुच्छ अगम अति।
जो नहिं जुगलअनन्य पगैं प्रिय प्यार प्रीति रति॥
एड़ीं अति रमनीय ललित लालिमा जाव जुत।
धरा धरत धकधकी होत आलिन मानस द्रुत॥७३॥
चरन सरोज विचित्र चारु तल अंक अमल मय।
परिकर ध्येय विशेष सुषद चिंतामनि चित चय॥
पायजेब आसेव करन रसिकन नूपुर तिमि।
अनवटबिछियाविसदमहामनिरचितसुरिमिझिमि।७४॥
अपर अनेक अनूप अमल भूषन निर्दूषन।
पदपंकज मधि लसत हँसत प्रतिभा ससिपूषन॥

पारिजात सत सुमन रमन पांखुरी प्रवीनी ।
लसत आंगुरी नवल नित्य नव नेह नवीनी ॥७५॥
सारी सुरुख सुसब्ज नील प्रिय पीत प्रीति निधि ।
समै समै पौशाक परम पहिरे प्रकास सिधि ॥
कनक महामनि रचित हरित लहँगा विचित्र तर ।
चादर चित वित हरन सजल बादर दिमाग हर ॥७६॥
चहुँधा मानिक मुक्त रतन संरचित खचित पट ।
नाना रंग उमंग संग सषि सुठि सजतीं तट ॥
वसन लसन अनमोल लोल अविलोल झलक छवि ।
फैलि रही दस दिसन प्रभा अविचिंत्य चारुफवि ॥७७॥
नष सिष बनी विचित्र सरस श्यामा नृपनंदिनि ।
राज किसोर रसज्ञ हृदय अनुछन अभिनंदिनि ॥
हेमलता छवि छटा घटा सौन्दर्य वारिधर ।
मधुर माधुरी मंजु लहर लहरी विचित्र तर ।७८॥
कलित कुमुद कमनीय कौमुदी कला कांति निधि ।
सुधा सिंधु वर बीचि चारु चंपा संपा सिधि ॥
इत्यादिक उपमान सान मद मान मर्दनी ।
अवध सुधा निधि चंद चारु चित चाव वर्द्धनी ।७९॥
जनक जनेस सनेह सरस पंकज प्रकासिनी ।
अमल अनिंदित मोद मधुर नव रस विकासिनी ॥
रघुकुल मनि प्रिय प्राण प्रेयसी परा प्रीति पति ।
अंग अंग अविलोल ललित लावन्य लसन अति ॥८०॥

चंद चन्द्रिका चारु चमक चांदनी हारिनी ।
विलसति विमल विहार रसिक सद्रस विहारिनी ॥
मत्त मतंग सुरंग हंस सम गति विलासिनी ।
प्रीतम प्रेम प्रधान क्रोड़ निसि दिन निवासिनी ॥८१॥
नव जौवन रस रास मंद मृदुहास साजनी ।
मति गति अलष विनोद मोद सद्रहस राजनी ॥
सखी सहचरी केलि कला कुसला आलीगन ।
मधुर मंजरी जूथ सुपद वंदिता मोद घन ॥८२॥
निषिल सुपरिकर नित्य सतत स्वामिनी नामिनी ।
रसिकराज रमनीय राम रस रूप भामिनी ॥
कलित कंज कमनीय सुकर कौतुक कलापिनी ।
प्रीतम मन वस करन वचन अनुपम अलापिनी ॥८३॥
वारक जेहि जन हृदै परत प्रतिभा प्रकास तन ।
पावत परम प्रमोद विपिनि रस रहस अमल मन ॥
सिय सुंदरी सुनाम सुधा जेहि श्रवन वचन धुन ।
वसीभूत तिहि होत नवल नागर नवीन गुन ।८४॥
संजीवनी समान प्रान प्रीतम सनेह सुचि ।
रहत एकरस नित्य निखिल निज निदरि नाद रुचि ॥
जेहि विचित्र थल लली चरन अरविंद देत द्रुत ।
तिहि सुचि सदन समीप ललन नव नैन नेह जुत ॥८५॥
बँधे प्रिया प्रतिबिंब बीच विह्वल विलास घन ।
सुधि बुधि विपुल बिहाय पगे प्रनयी प्रवीन धन ॥

बिसद वाम वर दच्छ भाग रस रंगी कामिनी।
लसहिं अनेक अनूप गौर दुति देह दामिनी।८६॥
मनहुँ मनोहर रतन वलित विन दाग ताग तर।
किधौं अमल घन घेरि रही प्रतिमा उज्वल वर॥
किधौं सुमन सुचि सब्ज सरस चहुँदिसि रसाल अति।
लसति पीत नवनीत सदस मृदु कुसुम कली कति॥८७॥
किधौं रसल रसराज जुगल आसा असेष छवि।
विमल भाव अनुभाव विभावादिक अनेक फवि॥
किधौं इन्द्रमनि मधुर मुकुर चहुंपास रतन दुति।
अमल अनूपम रंग महित भासत सनेह जुति॥८८॥
राजत जुगल किसोर श्याम सित सीम सान सजि।
प्रसरति हरित हमेस हरित आभा सुकांति भजि॥
बाग बहार विहार वेष अनिमेष देखि हग।
चित्र पूतरी सदस रहत जिमि निरखि दीप मृग॥८९॥
अति विचित्र सुभ समय समुझि सुषसदन नागरी।
मधुर मृदंग मुर्चंग मंजु मुरलिका आगरी॥
वीना सरस सितार तार तंबूर वाद्य बहु।
जलतरंग सारंगि रबाब मंजीर सुगुरु लहु॥९०॥
अपर अनंत अजूब विविधि बाजन प्यारी गनि।
लगी बजावन प्रेम पगी प्रीतम सनेह सनि॥
सप्त सरस स्वर सहित विहित रागिनी राग गुन।
विपुल भेद अवछिन्न भिन्न भासत न भाव धुन॥९१॥

ललित लाड़ली लाल रिझावन गीत सु गावहिं ।
रस शृंगार प्रकार निखिल प्रतिपल दरसावहिं ॥
महा मधुर अनमोल सगुन संपन्न कामिनी ।
रास रसिक रघुनंद नेह निधि मगन माननी ॥६२॥
विमल वाद्य वर गान श्रवन करि रमन रंगवित ।
समुद सनेह निवास भये मोहित विलास हित ॥
निकर कामिनी काम धाम पर गुन ग्राही वर ।
सियवल्लभ सुकुमार मार मोहन प्रमोद कर ॥६३॥
प्रिया सनेह समेत प्रेमनिधि हास लास रस ।
निज चिंतामनि चित्त चारु अंतर विनोद बस ॥
रसावेस संपन्न सजन रचि रहस अजिर मधि ।
मंडल मधुर मनोज मथन आनंद सुधा निधि ॥६४॥
अति अनूप मंडली रास रस रास सार सुष ।
दीपत दसहुँ दिसान दमक द्वि जात दाह दुष ॥
सोम श्रवन वट छटा घटा अद्भुत प्रकास कर ।
परन परन प्रति अमित रैनपति निवछावर तर ॥६५॥
मधुर मंडली मध्य माधुरी रूप सदन जुग ।
चमकत चारु चलाक चित्त चष हरत विपुल रुग ॥
महा मनिन मृदु रचित चारु छिति झलझलात अति ।
दिव्य भव्य भाविक सुभाव वर्द्धन अपार रति ॥६६॥
रमकन रव रमनीय नवल नूपुर पुनीत पद ।
झमकन कंकन कंज करन कल अमल मदन मद ।

कलयन किंकिनि कलित केहरी कटि विलास थल ।
वलयन वलय विचित्र चारु चलयन अजूव बल ॥९७॥
विपुल बिभूषन बिमल बजत सुष सुनत सजत सत ।
पूरित दसो दिसान ध्यान रसखान प्रेम जुत ॥
नील पीत वर वसन लसन तन जुगल ललित अति ।
मधुर कुसुम मृदु माल लसत रस जाल लहर रति ।९८॥
सुमन सुमनजुत सरस सुभग मृदु हसन लसन लषि ।
चकित चारु चष चपल चषक सुचि सुधा स्वाद चषि ॥
सोहत सहर सोहाग राग कुल कहर जहर हर ।
गहर गुनेस रसेस वेस सब देस सुधा सर ॥९९॥
अमल कमल दल नैन नाज नूतन निकेत नित ।
विलसित विमल विनोद मोद रस रास रमन चित ॥
नटहिं नागरी निखिल नवल नागर कदंब जुत ।
गावहिं गीत बिहार वलित रचि सुपद सरस द्रुत ॥१००॥
नचहिं नेह वस आप अपर नागरी नचावहिं ।
मचहिं मदन कलकेलि मेलि मुद माल रचावहिं ॥
पगहिं परस्पर प्रेम प्रभा अति अमल देखावहिं ।
नाना रंग अनंग दंग कारन प्रगटावहिं ॥१०१॥
हरषहिं हरष हजार सहित औरहिं हरषावहिं ।
विमल विहार विनोद नीर निर्मल वरषावहिं ॥
भ्रमहिं भाव वस आप अपर तन मन भरमावहिं ।
भ्रमहिं यदपि सब भाँति तदपि दंपती रमावहिं ॥१०२॥

सुभग सजल घन स्वच्छ श्याम वेनी श्रेणी सुष।
सुरज सुरंजित, केस देत आवेस समन दुष ॥
वंक तरल तार्टंक अंकहारी असेष चित।
लसत श्रवन प्रतिभात परम सरसात नवल नित ॥१०३॥
जुगल विलास हुलास रास रस भरी सरी सुष।
उपमा अमित निरास अमल अनुपम उदार रुष ॥
तिन सहचरिन समाज मध्य मोहन मन मोहन।
सोभित सहज सनेह सहित सुंदर सुठि सोहन ॥१०४॥
जिमि राकापति अमित प्रभारंजित तारा मधि।
राजत अति अनमोल अमल सौंदर्य सुधा निधि ॥
अद्भुत रमन रंगीन पाय पिय तिय प्रमोद सर।
तजहिं न प्रिया अनूप कांति कमनीय कलाकर ॥१०५॥
जिमि कोउ रंक कलेस निकर करि लह्यो लाल मनि।
प्रान समान प्रमान जानि जोगवत तन मन सनि ॥
श्री सरजू तर तीर रमत रसिकेस श्याम घन।
रघुनंदन विधुवदन नवल नागरी प्रानधन ॥१०६॥
नटवर वेष विसेष रेष रस रंजित रमकन।
मंद मधुर मुसक्यान चतुर चूड़ामनि चमकन ॥
कलित काछनी कसे सु कटि रस रसे लसे अति।
कंचुक काम कलोल केलि संकलित सुतनयति ।१०७॥
क्रीट काम कमनीय भाल भ्राजत विचित्र तर।
नाना मनिन जड़ाव जगत जगमगत प्रभा पर ॥

सुचि सोरहों सिंगार सजे लषि लजे असम सर।
अगनित भूषन वलित वपुष सुषप्रद रसिकन उर ॥१०८॥
महारास रसलीन प्रिया अंसन भुजधारी।
बार बार सहचरी जाहिं रसनिधि बलिहारी॥
अमित असम सर विजय करन वर रूप सँवारी।
सोहत सरजू पुलिन बीच श्री अवधविहारी ॥१०९॥
अगनित सखिन समेत नेह नाजुक निकेत नित।
अवध सुधानिधि चंद मंद दुति करन इंदु दित॥
भजे जानकीजान सु जीवन जान जिवावन।
सजे सोहावन सान परम पीयूष पिवावन ॥११०॥
नर्म नेह प्रिय रहस नरम वर वचन नरम नव।
नरम चातुरी चलन चाव चित नरम मधुर रव॥
नरम नाजनी नाह नायिका नरम रमन रति।
भजे जानकीजान प्रानवल्लभ रसेस पति ॥१११॥
दंपति सम वय रूप विभव गुन रमन एक रस।
रती मदन विवि बीच वदहिं ते नीच मीच वस॥
जुगल रहस रसपान कलित क्रीड़ा विहार हित।
दरसत भिन्न अभिन्न लषहिं मुद वन विहार वित ॥११२॥
नायक गुन गन ललित भव्य भाजन नागर नित।
अपर सदन नहिं होत संभवित रस विचार चित॥
अमल सफल अनुकूल सूलहारी नायक मनि।
श्री प्यारी वर वदन विलोकत रहत मानि धनि ॥११३॥

दच्छिनादि सब भेद खेद विन समै समै पर।
प्रानप्रिया आधीन अखिल कलकेलि भाव भर॥
समैं समै सुष उदय हेत प्रीतम पिय प्यारी।
रचहिं अनेक विनोद कुतुक कल कुंजन चारी॥११४॥
परकीया संबंध सीयवल्लभ अजोग अति।
सरस स्वकीया संग समय सुष सुकर रहस रति॥
वृथा वकत वद वैन जैनमत सम ते नाहक।
परकीया रति असति अवध आभरन न गाहक॥११५॥
काहू विधि नहिं उचित इतै रति आन तियन सन।
केवल श्री मिथिलेश किशोरी सुकर विक्यो मन॥
जेती ब्याही वाम प्रानवल्लभ सुषमाकर।
श्री लाड़ली सुसेव सजन कारन प्रमोद कर॥११६॥
तत्सुख सुखी प्रधान स्वसुष अंतर अदाग रति।
नैन वैन सत सैन विवस विहवल सनेह मति॥
नवल नायिका वृंद वदन अरविंद विलोकी।
रहे निरंतर मत्त दसा निज निसा विसोकी॥११७॥
ललित लाड़ली लाल सुरत सुष सेज संवारैं।
निरखि नवीन विनोद निखिल तन मन धन वारैं॥
ताते व्यसन विहाय सेइये श्री सीतावर।
जातें परम प्रमोद पाइये नित अंतर उर॥११८॥
श्री सौंदर्य समेत स्वामिनी सीय सलोनी।
विवस विहारी विपिनि मोद छकि छकि छवि छोनी॥

आसय अमल अगाध व्याध व्याकुल न लहैं गति ।
दंपति कृपा कटाच्छ पाय परसत सद्रस मति ॥११६॥
काचिद्विरह हुतेस सहस विधि संतप्ता तिय ।
तजति न कांत नितांत यथा पोषित प्रीतम हिय ॥
कोउ खंडिता समान सजत आचरन वाम वर ।
लषि लोचन संभोग अंक अविसंक रसिक पर ॥१२०॥
कलहं तरिता कापि प्रिया कटु वचन उचारति ।
रोषामर्ष विहाय बहुरि वर विनय सँवारति ॥
कोऊ निज संकेतकुंज विन रमन लषे द्दग ।
तरजति निंदति निरावरन निर्वेद समुझि धृग ॥१२१॥
यथा प्रलाप कलाप विप्रलब्धा भासत पटु ।
तिमि अगनित अति प्रीति संकलित वदति वचन कटु ॥
गई नवल संकेतकुंज कोउ मिलन निमित तिय ।
विरहानल संतप्त परम पिय पेंष हरष हिय ॥१२२॥
उत्कंठिता सुवाम सद्रस प्यारी प्रसन्न मन ।
परसत प्रेम प्रधान अंग नवनीत नेह धन ॥
वासक सज्जा सुभग सरस कोउ सषी सयानी ।
गूँथति मधुर रसाल माल अद्भुत रसखानी १२३॥
गूहन समै सुदाम सुमन पिय गुन तिय गावति ।
रचति कुसुम सुचि सेज तेज तरुनता जनावति ॥
कोउ तिय रस पथ निपुन सहति छन भर न प्रान प्रिय ।
हरदम विपुलावेस सजति सुचि सार रहस हिय ॥१२४॥

समुझि सनेह सुजान किये निज वस वल्लभ पिय।
जिमि जगमगत जहान बीच स्वाधीन सुपति तिय॥
काचित नवला नाज भरी प्रीतम विलासिनी।
नवल नाह निज मिलन चलीं दस दिसि प्रकासिनी॥१२५
अन्वेषति प्रति कुंज कुंज विह्वला प्रानपति।
अविलंबित पदकंज धरनि धारत न कसक रति॥
अभिसारिका समान लसति वर वाम श्याम हित।
मिलन रहति उर दाह भेट पाये प्रमोद चित॥१२६॥
मानवती रस रूपवती पिय रंग रती तिय।
प्रनय समेत मनाय ताहि राषत प्रसन्न पिय॥
चतुर सिरोमनि श्याम मधुरतर वचन विविधि कहि।
रिझवावत वर वाम मान हिय हरि निज कर गहि॥१२७
चुंबन वदन विचित्र वनज्ज मधु रसिक मधुप सम।
आलिंगन अनमोल केलि कल्लोल सु रम भ्रम॥
हाव भाव रस भेद विज्ञ वामा विनीत अति।
हरित हँसन दरसाय हरित वर वरन हरति मति॥१२८।
ललित लाग अनुराग वलित वहु राग गाय गति।
रिझवाये छवि वाग विसद दंपति सोहाग पति॥
मधुर मनोभव मथन रास मंडल प्रकास निधि।
नटहिं नाजनी नारि प्यारि प्रीतम विचित्र विधि॥१२९
सुंदर तर संगीत गीत मंडित नाचहिं तिय।
सुरन दुरन मुद करन हरन हिय सुगति लेहिं प्रिय॥

नवल अंग अरविंद विविधि विधि करि कलान कल।
रिझवावहिं रिझवार ललन लोयन सुभाँति भल॥१३०॥
चँवर चारु सित स्वच्छ छत्र छविदार कंज कर।
कोउ सहचरी दिमाग भरी लिये व्यजन चित्र तर॥
लसत काहु करकंज मंजु सरजवदनी वर।
चंद्रमुखी कोउ गहे लहे आनंद प्रेम पर॥१३१॥
कलित कंज कमनीय लिये आलीगन राजहिं।
कंदुक केलि कलान निमित बहु विधि कर आजहिं॥
कलित किसोरी लाल वसन भूषन सोहाग सर।
ललना गन हिय हरषि लिये तजि मान मान जर॥१३२
जोवन जुगल किसोर 'सुछबि राती माती सब।
निज वैभव बिसराय रही गाती गुन दुति दब॥
श्री सीता स्वामिनी रूपमति बिंब बिंब सम।
यूथेसा रस भरी कहौं केहि भाँति रीति रम॥१३३॥
नित्य विहार प्रधान सौज सब सजीं छजीं भलि।
रचना सखिन समाज वदत सारदा गई छलि॥
श्री दंपति सुख सनी बनी नष सिष सेवा सजि।
लोक असोक निवास किये भव सोक ओक तजि॥१३४॥
सुमन माल मनिमाल अमित अलि सजे सुकर वर।
पान दान रसखान विपुल भाजन विचित्र तर॥
दंपति वसन विलास विपुल नव रँग रस रंजित।
साज समूह सजाय सपी सोहहिं दृग अंजित॥१३५॥

अमित प्रकार रसाल असन अनवद्य सुधा सुचि।
लिये ललित करकंज निकर परिकर निज निज रुचि॥
चामीकर कमनीय कलस मधि धरि मादक रस।
रहस रंग रस सरस हेत मैरेय मधुर जस॥१३६।
सरस सुगंध कदंब कुंभ कंचन निधाय प्रिय।
नेह सगुन गन नहीं सही सौभाग्य सजी तिय॥
नाना रंग विचित्र जंत्र जंत्रिता वाम बहु।
अमित चित्र करकंज गहे द्विज हंस सु गुरु लहु॥१३७॥
मन वानी गुन पार विमल वर वस्तु लिये अलि।
झूमत जुगल विहार रसी कुंजरगमनी चलि॥
दंपति चरन सरोज चारु अर्चन सेवन रुचि।
निरत सहचरी सतत न उर उपजत विकार रुचि॥१३८॥
अनुदिन अधिक उछाह सहित सबहीं सिय पिय पद।
निरषहिं नैन निहाल नित्य मानहिं सोहाग सद॥
रासेश्वर सुषमेस सु सुंदर वदन विलोकहिं।
राई लोन उतारि तरलताई दृग रोकहिं॥१३९॥
रास सुधा सत सिंधु स्वच्छ सुचि भाव भरित भल।
अगनित लहर उमंग उठत आमोद रहस थल॥
विपुल वाम रमनीय रतन अवली विराजतीं।
नव किसोर चितचोर सौज सब विधि सुसाजतीं॥१४०।
हेम वरन वर वाम वदन विधु विमल वनज मधि।
रमत मधुप मनहरन राम रसिकेस नेह निधि॥

विधुबदनी रस रमित रमन विश्रांत सुमन सुचि।
दलितांजन चय सदन समित निर्गुनि अंजन रुचि ॥१४१
छकि छकि विमल विहार मधुर मैरेय प्रानपति।
अघटित सरस सनेह सदन प्यारी प्रमोद रति॥
विलसत अलस समेत नैन रस अैन चैन प्रद।
सुकुमारी सुकुमार अंग नव रंग सुधा हृद ॥१४२॥
अमल मधुर मुखकंज मध्य श्रम विंदु विराजत।
मनहुँ वनज रसराज बीच रति छवि छन छाजत॥
सिथिल उरोज सरोज कलित कच प्रभा सभा रस।
अनुपम प्रेम प्रकास करन कारन विचित्र जस ॥१४३॥
सुषमा रमा रसेस प्रमानहिं जात रंच करि।
जयति किसोरी कांति कांत कमनीय हीय हरि॥
जयति जानकी अधर सुधा पीवन जीवन नित।
जयति प्रिया प्रिय प्रेम पात्र अनुराग भरित चित ॥१४४
नव नीरद सम श्याम राम अभिराम रूप जय।
तड़ित विनिंदक वसन विहारी लसन हसन जय॥
जयति दिवाकर वंस अमल अवतंस हंस जय।
जयति मदन सर नैन वैन मृदु सुधा स्वाद जय ॥१४५॥
महा मनिनमय माल जाल सहचरी सुमन जय।
उरसि आभरन अमित रास अति श्रमित सुहृद जय॥
रुचिर चारु रमनीय मधुर मुस्क्यान सान जय।
जयति जुगल आनंद सुधा सागर विनोद जय ॥१४६॥

युगलानन्य अधार प्यार वरधन रसेस जय ।
भजे जानकीरमन रास रस रमन समन भय ॥
दंपति केलि कलोल कामिनी कलित ललित अति ।
सुनत सोहावन सतत सजग सरसत विहार मति ॥१४७॥
रसिक अनन्यन निकट सुनावत सहित प्यार प्रिय ।
रीझत रसिक नरेस देन आनंद विसद हिय ॥
निज मति वैभव सहस कहहिं सब सुजन सार वित ।
पारावार अपार चरित रस भरित अपरमित ॥१४८॥
सर्वोपर सिरताज रहस जस जीवन मूरी ।
बड़भागी जन सेय लहैं मंगल मुद भूरी ॥
सब साधन से भलीभाँति निरवेद कीजिये ।
जीवन धन पीयूष परम पल पल सु पीजिये ॥१४९॥
रूप रमन रमनीय झलक सुवरन प्रति राजत ।
निरखो नैनन खोलि कपट कीन्हें नहिं छाजत ॥१५०॥

इति श्रीविनोदविलासे परम रासरस निवासे
सरस प्रकासे चतुर्थोऽध्याय ॥४॥

❊ पञ्चम अध्याय ❊

नवल नागरी नाह नेह नेहिन पद ध्याई ।
वरनों विमल रहस्य सुधा सागर सुषदाई ॥
सियवल्लभ जस स्वच्छ देत परत्यच्छ परम पद ।
जेहि नित नेति निरूपि वेद संहिता न लहि हद ॥१॥

रती मात्रहू श्रवन हदै आवत अनूप रस।
छावत छवि अवधेस भुवन सब भाँति होय वस ॥
सब साधन फल आस अरस सम समुझि हेय गुनि।
रसना रमन चरित्र मनन लायक पवित्र धुनि ॥ २ ॥
सुचि सुंदर संवाद श्रवन कीजे संभारि मन।
परम प्रेम प्रतिकास करन कारन रहस्य धन ॥
श्री अगस्त्य मुनिराज रसिक रसराज उपासक।
अति अनन्य व्रत सीम मधुर मन रमन प्रकासक ॥ ३ ॥
भाविक भाव विचित्र भाल मानहुँ अनूप लिपि।
लिषी विरंचि विचारि कहौं केहि रीति रहे छिपि ॥
जिनकी कीरति कांति कांत अपने मुख बरनी।
विदित गोप नहिं बात सुनत संसृत सरि तरनी ॥ ४ ॥
ऐसे मुनि सिरताज रसिक अधिराज पास पुनि।
प्रश्न प्रेम रस पीन करो निज नवल रहस सुनि ॥
श्री रघुवीर सुधीर प्रीति सत मत प्रतिपादक।
महावीर रस धीर जुगल छवि रति अनुवादक ॥ ५ ॥
नव नेहिन हित मधुर महीरुह मनहुँ महानिधि।
प्रगट पवन प्रिय प्रान परम पावन सनेह निधि ॥
अमल अनूप स्वरूप ध्यान धारत आरत हर।
सब प्रकार भव भार समन सुचि स्वाद सुधा सर ॥ ६ ॥
श्री मुख वचन विचित्र चारु दिनकर मयूप सम।
सकुचित सुमन सरोज सुकृत विकसित विशेष मम ॥

जेहि मधि मधुर मनोज मान मोहन प्रमोद निधि ।
विलसत मधुव्रत सदृस श्याम श्यामा सनेह सिधि ॥ ७ ॥
परिकर निकर समेत तजत नहिं हेत कंज कल ।
इह प्रभु कृपा प्रताप अपर भासत न हृदै थल ॥
तेहि हित बहुरि विलास रास रस रास सुधा सम ।
श्रवन निमित उत्साह कहिये करुनेस निकट मम ॥ ८ ॥
सुनत रहस्य चरित्र तोष पावत न प्रान पल ।
चाहत चित जिमि रंक परसमनि सुरुचि हृदै थल ॥
सुनि सनेह संमिलित ललित वर वैन वलित गुन ।
बोले विहँसि विलास विमल वर वचन रमन धुन ॥ ६ ॥
बड़भागी मुनिवृंद सुपद पूजित रसेस प्रिय ।
अनुछन अमल अदाग राग अनुराग झलक हिय ॥
सुनिय सोहावन सरस अरस हारी विनोद वर ।
रसिक अनन्य अधार प्यार वरधन विचित्र तर ॥१०॥
निरषि नेह निधि नाह नवल आनंद सुधासर ।
विसद वल्लभा वदन सदन सौंदर्य वर्य वर ।
श्रांतस्वेद संपन्न कांत कमनीय कलाकर ।
आनन अति अनमोल लाल लोचन हुलासकर ॥११॥
समुझि सहज सुकुमार अंग वल्लभ विहार बस ।
समुदित सुमन सम्हारि धारि उत्साह स्वाद रस ॥
मधुर मनोहर सरित मांझ कीजे चलि मंजन ।
अगनित केलि कलोल तहाँ बहु विधि रस रंजन ॥१२॥

सखी सहचरी जूथ श्रवन सुनि सुघर बाग वर।
हिय हरषीं आनंद बुंद बरषीं सुराग तर॥
नवल नटन गुन गान घटन उघटन सुजंत्र जिमि।
अपर अनेक अजूब खूब कौतुक सुपंथ तिमि ॥१३॥
चारु चँवर वर व्यजन छत्र अति चित्र मनिनमय।
छाजत छवि निधि सीस सुभग चहुँ पास सुरव जय॥
अमित सौज सखि साजि चलीं प्रीतम प्रमोद हित।
सुमन माल मनिमाल मधुर आमोद मोद चित ॥१४॥
युगल सु जीवन जान जड़ित जीवन किसोर मनि।
पहुँचे परम प्रमोद सहित अति निकट नीर धनि॥
निरखि नीर नव नैन ऐन आनंद बिहारी।
तरल तरंग उमंग रंग संजुत सुषकारी ॥१५॥
सत सौरभ संपन्न श्रिया संयुक्त सुक्त सम।
मदन प्रमोद प्रदीप करन वन अति अद्भुत रम॥
श्री सरजू श्रृङ्गार सदन प्रिय वदन बिहारी।
ललित लड़ैती अंग अमल आलिंगनधारी ॥१६॥
प्रिया प्रेम परतंत्र मंत्र मोहनी हँसन बस।
वल्लभ विसद विनोद रूप रसराज सुधारस॥
सुचि सुशील सुकुमार सुरभि संजुत जल कर गहि।
श्री सरजू सुपुनीत चरन सरसिज पूज्यो लहि ॥१७॥
बहुरि वनज कल कुसुम सुभग वस्तुन विचित्र जुत।
अर्चन कियो सुधारि पाद पंकज अति अद्भुत॥

अमित मधुर रस धारि थार नैवेद्य विविधि धरि।
अगनित अपर अनूप सौंज उपचार नजर करि ॥१८॥
नव रस भरीं विचित्र विसद वीरी सुकंज कर।
दई गई बलि आप सखी सरजू सनेह सर ॥
लषि सहचरी सनेह हरषि दंपति प्रसन्न चित।
सखिन सहित रस रूप वारि अंतर क्रीड़ा हित ॥१६।
अधिक अनंग उमंग अंग अंगन सजाय सब।
मज्जन लगे रहस्य रंग रस पगे प्रेम तब ॥
केलि करत कमनीय कला कौतुक अनेक रचि।
दंपति उर उत्साह मौज माधुरी मदन मचि ॥२०॥
जुगल विचित्र बिहार किधौं कलहंस हंसिनी।
किधौं मत्त मातंग कलित करनी प्रसंसनी ॥
किधौं कामिनी काम किधौं जामिनी चंद वर।
किधौं सजल घन दाम नीर अंतर विनोद कर ॥२१॥
किधौं अमल अनुराग रूप रस भूप सुतन धरि।
क्रीड़त कुँवर किसोर किसोरी व्याज साज करि ॥
सखिन सहित घनश्याम राम अभिराम नवल तन।
रसिक मनोरथ मधुर काम दायक प्रसन्न मन ॥२२॥
नवल नाजनी नारि कंज कर गहि गरूर गुनि।
प्रीतम परम रसज्ञ रचत कौतुक अनेक पुनि ॥
अति अगाध जल बीच डारि हरषत काहू पिय।
तिमि काचित वर बाम १करि विन वसन करत हिय ॥२३

रसनिधि निज वर बाहु जंत्र यंत्रित ललना करि।
मगन होत छबि जोत परम प्रगटत सुधीर धरि॥
कैतव कुसल अजूब नायिका एक कंज दृग।
निपतित प्रीतम अंग अमल मानो मनोज मृग॥२४॥
किधौं सचीपति सुमनि नवल नग लषि समान घन।
गिरत छटा छवि सहित रहित आमर्ष हर्ष मन॥
किधौं सजीली स्वर्णलता सुर द्रुम सनेह तजि।
अमल तमाल अनूप रंग रमनीय आप भजि॥२५॥
काचित कला निकेत वाम कूदत स्वतंत्र जल।
गहत लाल करकंज जाय औचक असंक कल॥
प्रीतम प्रेम प्रकासि परम पंडिता रहस मधि।
ललिन समेत अथाह नीर मज्जति विचित्र विधि॥२६॥
ललित लड़ैती लाल सखिन सम्पन्न परस्पर।
नवल नीर कन कंज करन सींचत विचित्र तर॥
कोमल कर पदकंज मंजु आघात सरस सुचि॥
करहिं केलि कमनीय रमन रमनी समेत रुचि॥२७॥
महा मधुर धुनि छाय रही चहुंओर विलच्छन।
सखिन सहित सिय श्याम नवल रस समर अनुच्छन॥
कोउ सहचरी सनेह सनी लपि ललित उरस्थल।
मृदुतर सुपद सरोज हनत क्रीड़ा रस विह्वल॥२८।
काचित सखी सलोन ललन दै अंक माल अति।
समुझि विपुल भय नीर मध्य मज्जन हित डरपति॥

अति चातुरी रचाय एक आली अलबेली।
गहि प्रीतम प्रिय अंग गई वन बीच अकेली ॥२६।
काचित सखी सरोजमुखी अति सबल धार मधि।
पड़ी बड़ी हैरान हीय व्याकुल न रंच सुधि॥
तरल तरंगन संग वसन त्रिलगान न जानति।
बहुरि होस हिय लाय विपुल ब्रीड़ा मन मानति ॥३०॥
सरम सकोच सजाय निकट प्रीतम न जात तिय।
कोउ अलि कर गहि वाहि विहँसि सनमुख कीन्हीं पिय॥
तउ ब्रीड़ा संपन्न वाम मज्जति अंतर जल।
निरखि नवल निज नैन नाह दोन्हीं सुवसन भल ॥३१॥
रसिक सिरोमनि श्याम राम अभिराम नेह निधि।
जुगल करज दै चिबुक बीच चुम्बन करि बहु विधि॥
कलित कपोल अमोल वाम निज प्रिय संजुत करि।
चाखत सुधा समूह अधर रस अति उमंग भरि ॥३२॥
जिमि चंचल पन छोड़ि चतुर चंचरी कंज रस।
पीवत परम प्रमोद पाय घूमत सनेह बस॥
यहि विधि विपुल बिहार सहचरिन संग रंग रचि।
करि सनेह रस लीन मीन मन हरन स्वाद सुचि ॥३३॥
जल क्रीड़ा कमनीय निकर परिकर विशेष सजि।
भीने नवल निचोल सरस सिर रुह आनन भजि॥
हेम मनोहर वरन छोभवर वसन सुतन छवि।
दंपति नेह नवीन परमं प्रतिभा भासति फवि ॥३४॥

अपर अनेक अजूब केलि कौतुक कलोल करि ।
श्री सरजू तर तीर ललन राजे जुत सहचरि ॥
भूषन वसन विचित्र अंग नव रंग सँवारी ।
विविधि सुगंध सुदाम पहिरि सोभित पिय प्यारी ॥३५॥
मधुर मनोज उमंग करन कारन विनोद वर ।
जयति सुरव सुषमूल सखिन वरनी विचित्र तर ॥
गाय गान रसषान विपुल बाजे बजाय पुनि ।
मंगल अमल अपार श्रवन मुदप्रद उमंग धुनि ।३६॥
चहुँदिसि सखी समूह सौज सुष सार सजे सुचि ।
दंपति प्रेम प्रवीन पंथ पावन प्रचुरत रुचि ॥
श्री सरजू सनमानि सकल विधि युगल छैल करि ।
मंजुल कुंज विचित्र बहुरि प्रविसे विनोद धरि ॥३७॥
तहँ पुनि परम विलास हास रस रास अमित रचि ।
सुषद धाम आराम रमन हित हिय कीन्ही रुचि ॥
नृत्य गान रमनीय सहित पहुँचे सुरंग थल ।
षटरितु जित रस येक रहत अनवद्य अमल भल ॥३८॥
विपुल विहंग अनंग रंग वरधन विचित्र धुनि ।
सजत हृदय अह्लाद स्वाद रस रीति श्रवन सुनि ॥
रचना अपर अनेक नेक नहिं जात येक कहि ।
उघरत उर दृग चाह परम उत्साह रहस लहि ॥३९॥
अमर भूमिरुह मधुर महारस रूप येक रस ।
साषा पत्र प्रसिद्ध प्रेममय कुसुम सफल लस ॥

परन परन प्रति प्रभा सभा सौंदर्य वर्य अंकि ।
विलसत विमल विचित्र निखिल भाँतिन से छवि छकि। ४०
तासु अमल मृदु माल मध्य मंडप अनूप अति ।
महा मनिन अनुराग रूप मंडित वितरति रति ॥
तोरन तरह अनेक रंग रमनीय रचित तर ।
कनक कलस कमनीय कलित अति ललित वरन वर॥४१
अति अनमोल अनूप थंभ आरंभ रंग दुति ।
रतन रचित मनि खचित चारु चमकत अलखित गति॥
शरद सरवरी स्वामि सदस सुचि स्वच्छ असतरन ।
अमित वरन मन हरन करन अनुकरन रहस रन ॥४२॥
दिव्य भव्य नित नव्य विमल आसन विसाल वर ।
सौंज अजूब अपार लसत लावन्य सुधा सर ॥
तेहि थल अनुपम मध्य सुभग सिंहासन सोहत ।
महा मनिनमय कांति सांति मुनि मन मति मोहत ॥४३
दिनकर अमित प्रकास होत प्रति रतन निछावर ।
उपमा कहन न जोग कहै कोऊ कवि बावर ॥
षोड़स दल जुत जलज सीश जगमगत तासु मधि ।
राजत रसिक वरेस प्रिया संपन्न नेह निधि ।४४॥
मंजुल कुंज सुपुंज कुसुम प्रफुलित चारों दिसि ।
अति प्रकास सब समै मनहुँ अद्भुत प्रीतम निसि ॥
विविधि वरन द्विज निकर मुखर प्रति वन मनमोहन ।
ललित लाड़िली लाल रहस रसमत्त मधुपगन ॥४५॥

सुमन सुफल संपन्न सरस रितुराज प्रमुख रितु।
सोहत मोहत मनहिं मदन उन्माद करन चितु॥
नव पल्लव रमनीय भ्रमर भ्रमनीय विलच्छन।
नमित सुछिति छवि छजहिं मनहुँ गुनवान विचच्छन॥४६।
वहत त्रिविधि वर वात प्रात दिन मध्य येक रस।
सुचि सुष परस प्रसन्न परम जेहि लहि विनोद वस॥
कामद काम कलाप कलित कामिनी कोटि विधि।
सामद सज्जन सुहृद हृदै अहलाद हेत निधि॥४७॥
वनज सुदल वर बीच वसहिं विलसहिं विनोद जुत।
षोड़स सखी प्रधान नाम सुनिये अति अद्भुत॥
उज्वल रस रँग रँगीं पगीं प्रीतम रहस्य नित।
जिनहिं अपर नहिं काज सतत सेवा सरसत चित॥४८॥
सुधामुखी सुष सदन उज्वला कलित कांचनी।
चित्रा चित्र विचित्र चरित उत्साह सांचनी॥
श्री चन्द्रकला कमनीय कला कमला कुसला अति।
चन्द्रानना सुचारु चित्ररेखा विचित्र मति॥४९॥
विमल वैन सत सैन सखी सोहत विसदाछी।
कर्पूरांगी सखी प्रसंसी हंसी आछी॥
वरा वरारोहा विसेष रस छवि विलासिनी।
दंपति केलि कलान निरत माधुर्य मालिनी॥५०॥
षोड़स सखी समीप सतत सोहहिं जोहहिं छवि।
उमा रमा रति रूप सदृस वरनत सकुचत कवि॥

कंज उपदलन मध्य मधुर माननी वाम वर।
षोड़स लसहिं अनूप नाम सुनिये प्रमोद कर ॥५१॥
सखी सोभना संतोषा शुभदा शुभागिनी।
हेमा छेमा छेमदायनी रहस रागिनी ॥
चारुस्मिता सुचारु रूप रंजिता सु श्यामा।
चारु लोचना चारु अंग मंडिता सु वामा ॥५२॥
धात्री धीरा धरा सखी सांता सुचि सोही।
सुषदा श्री दंपति सनेह सजि रस नृप मोही॥
सेवहिं सखी समूह रैन दिन जुगल चरन तल।
निरखन विन कलकेलि कलप सम परत पात्र पल ॥५३॥
छीरोद्भवा विचित्र भद्ररूपा प्रसादनी।
प्रेम रूपिनी वाम परम पावनि अनादनी ॥
कंजलोचना अली विसद वर हंसगामिनी।
रमनीया अति सुष्ट कुंकुमांगी सु भामिनी।५४॥
रसोत्सुका रसरमन रंग अनुछन प्रकासिनी।
द्वादस दल मधि वसहिं लसहिं ये तिय विलासिनी॥
काम मोहनी कामप्रदा माधवी सु दरसी।
अनमोला माधुरी पगीं प्रीतम पद परसी ॥५५॥
सखी सुमालिनि मोदमई मधुरा रति भीनी।
जुगल किसोर सु चित्त चोर अनुपम रस लीनी॥
रती नतिवती प्रेमप्रदा विमला सु विराजी।
कुसला कलानिकेत ललित लीला छवि छाजी ॥५६॥

अमल उपदलन बीच बसी रस रसी लसीं अलि ।
जिनकी सुछवि विलोकि रमा अनगनित जाहिं वलि ॥
कौतूहल कलकेलि प्रेम मत्ता आलीगन ।
ललो लाल अनुकूल सुरुचि सेवा प्रसन्न मन ॥५७॥
बहुरि अष्टदल कमल अमल सोभा समाज मधि ।
कुंजेश्वरी प्रधान सखी सेवहिं विचित्र विधि ॥
अष्ट कुंज रस पुंज मंजु मोहत मनोज मन ।
जुगल विहार विलास अमित तहँ लषहिं सुद्ध मन ॥५८॥
प्रथम प्रेम प्रति वद्ध हृदै दंपति आलिन जुत ।
वेष कुंज कमनीय सुपद धारीं हरीस नुत ॥
अति हरषित हिय निरखि नवल रसिकेस युगल छवि ।
सखि विलासिनी विविधि वरन वर वसन अमल फवि ॥५६
विपुल विभूषन अंग अंग नव रंग सजाई ।
नष सिष सुछवि विलोकि विमल मनिगन वरसाई ॥
अति सनेह संकलित सुमन सहचरी सयानी ।
मंगल अमित प्रकार करी पुनि निज रुचि आनी ।६०॥
मेवा मधुर अनंत तरह पकवान सुधा सम ।
जुगल ललन करि भेंट प्रेम संमिली सुरति रम ॥
वीरी विमल बनाय दई पुनि गई वारने ।
अमल आदरस सरस सुघर दरसाय प्यारने ॥६१॥
ललित लाड़ली लाल माल कुंजन पग धारे ।
सांगा नंदिनि सखी निरखि छवि रस मतवारे ॥

सेवा सरस सजाय सखी पूजी प्रिय दंपति ।
भये प्रसन्न सप्रेम सुमन सज्जन सत संपति ॥६२॥
अपर केलि कल कुंज गये सुखसिंधु सुभग तन ।
जेहि थल वृंदा सखी भरी रस रंग नेह धन ॥
नित्या नित्यानंद महानिधि नित मज्जति मन ।
दंपति चरित सप्रेम गाय वारति तन मन धन ॥६३॥
रास रसिक सिरमौर तत्र बहु विधि विहार करि ।
विपुल भाँति सनमानि नवल निज नाह नेह धरि ॥
कामकेलि कल सहित तोष आली रसज्ञ रचि ।
बहुरि सुपद प्रिय कुंज आप राजे सु नेह सचि ॥६४॥
मधुर मनोरम निरखि नाह निज नैन कुंज कल ।
नित्या सखी प्रतोषि जुगल प्रमुदित सनेह थल ॥
भीने विमल विहार सुरस दंपति गमने तहँ ।
नवल हिंडोल सुकुंज कलित कामद राजत जहँ ॥६५॥
प्रेम प्रदरासिनि सषी अमित विधि पूजि परम प्रिय ।
झूलन बीच झुलाय आप झूली सनेह हिय ॥
गान तान रसखान सहित प्रीतम रिझाय अति ।
निज अभिमत सब रीति करी पूरन विचित्र मति ॥६६॥
रसिक सिरोमनि श्याम सीय संजुत सुषमाकर ।
सहज विनोद विलास वलित अँग अँग कुसुमाकर ॥
बहुरि मनोहर डोल कुंज पद कंज पधारी ।
जुगल लड़ैती लाल परम प्रतिकास सँवारी ॥६७॥

हरषित अधिक उमंग संग रस रंग रँगीली।
बसत विनोद समेत वसंत रंगिनी रसीली ॥
विमल वसंत प्रसून सरस संपन्न कुंज कल।
अति विचित्र चित चैन दैन बोलहिं विहंग थल ।६८।
कोकिल कलिल कदंब मधुर मधुकर मोहन मन।
चहुँ दिसि अति रमनीय सोक समनीय मोद घन ॥
मदन महान उमंग रंग सुमनन संदीपन।
रचना अमल अनेक लसत दिग दसहुँ उदीपन ॥६६॥
तेहि सुचि सदन नरेस सुवन सहचरिन सहित अति।
झमकि झूलि झुलवाय प्राण प्यारी प्रसन्न मति ॥
आलिन प्रिया समेत राजनंदन नवीन गति।
असन कुंज कमनीय मध्य आये रहस्य पति ॥७०॥
अनुमोदनी सुनाम सखी सौभाग्य सनी जहँ।
राजत जुगल किसोर आस निरखति निश्चल तहँ ॥
अमित प्रकार अनूप असन रस धारि प्यार करि।
जुगल ललन ढिग लाय अधिक उत्साह हृदै धरि ॥७१॥
दंपति परखि सनेह पाय प्रिय असन रसनमय।
सेष सखिन सुचि सौंपि निपुन नागर प्रवीन नय ॥
अँचवन करि रस ऐन विसद बीरी विचित्र लहि।
प्रिया प्रेम लयलीन कंजकर मंजु सुकर गहि ॥७२॥
आये सैन निकुंज श्याम श्यामा सनेह सजि।
भाये आलिन नैन सु छवि छाये विहार भजि ॥

नवल निकुंज विलोकि विमल रचना मंडित अति।
वचन अगोचर जानि न कवि कहि सकत पार मति ॥७३॥
दंपति परम प्रमोद पाय सब सौज साज लखि।
मदन मंजरी महा माधुरी पगी जहाँ सखि॥
अति विचित्र पर्यंक अंकहारी असंक रस।
निज प्रकास से रंक करत कोटिन मयंक जस ॥७४॥
कोमल अमल अजूब रंग अस्तरन सोहने।
बिछे विविधि वर वरन सुमन मन सबन मोहने॥
नाना रंग वितान तने सुख सजे गने किमि।
परदे परे विचित्र चित्रसारी सजीव जिमि ॥७५॥
सैन सदन रस रहस निरूपन करि न सकति मति।
कोटिन अंड कटाह लोकनायक लघुतम अति॥
मधुर मंजरी गान तान बहु भाँति करहिं कल।
सुनत सोहावन मदन मोद दीपन समोद थल ॥७६॥
प्रीतम प्रिया समेत रंग रस सहित सैन करि।
पगे विहार विनोद महारस रास हृदै हरि॥
दंपति वर विधु वदन प्रभा अवलोकि अलीगन।
विह्वल दसा सनेह साजि वारहिं तन मन धन ॥७७॥
अष्ट सु दल उपकोन मध्य मंजरी अष्ट नित।
विलसहिं विमल विहार सु परिकर सजि दंपति हित॥
ललित लता लावन्य सदन तरु सतत मंडिता।
कोककला कमनीय मध्य सब भाँति पंडिता ॥७८॥

मधुर माधवी मोद भरी मालती मोहनी ।
चारु चंपिका चाह छकी मल्लिका सोहनी ॥
पुन्नागा प्रियप्रेम पगी तुलसी सोहागिनी ।
अलि लवंगलतिका विचित्र धात्री सुरागिनी ॥७६॥
सकल सुरभि संपन्न निखिल सुचि सुमन स्वामिनी ।
मृदुल मनोरम अंगन तन उपमान दामिनी ॥
सरस सफल सत स्वाद सुधा सकुचावन वारे ।
मनिमय भाजन अमित मध्य धारे सुचि वारे ।८०॥
तेहि थल सखी सुजंत्र सहित हरषित उमंग युत ।
दंपति वदन विलोकि मोद पावहिं अति अद्भुत ॥
गावहिं गुन रस रीति नवल नागरी नटहिं पुनि ।
दस दिसि अति रमनीय मधुर पूरित विचित्र धुनि ॥८१॥
तिन आलिन नव नाम महा मुनिराज श्रवन करु ।
वीनावती विचित्र बीन हस्ता सुचित्त धरु ॥
वेनुकरा कमनीय रहस संजुत सुगंधिका ।
कविला सविला सेन सहित सोभा सु संधिका ॥८२॥
सप्त स्वर सुख सहित धरी सुपदा सोहागिनी ।
ललित खंजरी गही सुकर खंजाक्षि रागिनी ॥
रस मंजरी सुरंग जंत्र लीन्हीं रसाल कर ।
गान कला करकंज मधुर स्वरमय मृदंग धर ॥८३॥
सारंगी सारंगलोचनी सुकर सोहनी ।
प्रवर प्रमोद समेत बजावति मदन मोहनी ॥

दुति दामिनी सोहाग भरी सुष परस प्रवीना।
मुद मंडल मृदुमान मंडिता नेह नवीना ॥८४॥
सकल सहचरी निचम रहस रस जानन वारी।
दंपति नेह निसोत दाम बाँधी पिय प्यारी ॥
महा मनिन संकलित मधुर मंडप महान मधि।
राजत रसिक नरेस प्रानवल्लभा सहित सिधि ॥८५॥
रचना अपर अनेक कौन विधि कहे सुमति कवि।
सो जाने सुचि मदन मरम जेहि जिय झलकत छवि ॥
तारापति रवि अनल तेज सत पदुम प्रभा हर।
चिंतामनि चित हरन मोह कारन मनोज डर ॥८६॥
वाम विचित्र सु पीठ अमल अद्भुत प्रिय पावन।
विविधि मंत्रवर वरन सतत सेवित छवि छावन ॥
तत्त्व पार सुषसार गम्य गुरु वचन येकही।
अपर उपाय असार ज्ञान योगादि टेकही ॥८७॥
प्रनव सहित सब बीजमंत्र संवलित येकरस।
अमित मनिन गुन मध्य यथा राजत मनीस जस॥
दिव्य दिव्यतम स्वच्छ पीठ दिल दीठ परत सुख।
सागर उगमत चहूँ ओर रंचक न रहत दुख ॥८८॥
केवल श्री स्वामिनी कृपा कमनीय पाय जन।
जोहत पोहत चित्तवृत्ति रस येककरन गन ॥
तेहि आसन आसीन जलजलोचन मोचन भय।
प्रिया अंस वर बाहु विलच्छन रीति नवल नय ॥८९॥

ललित सु भुज आजानु विजयकारी प्रसन्न नित ।
परिकर निकर सु कंज मंजुकर संतत अर्चित ॥
सरद सोहावन चंद मंद कर लसत वदनवर ।
अंग अंग रस रंग भरित आभरन भव्यतर ॥९०॥
प्रान जीविनी जनकलली वर वाम भाग लसि ।
मनहुँ मनोहर मेह निकट माननी दाम वसि ॥
लली लाल छवि जाल अंक आलिगन कीने ।
हास हुलास विलास साजि सब हिय हरि लीने ॥९१॥
सुधा विनिंदन वचन परस्पर नव प्रमोद कर ।
सुनत गुनत उत्साह चाह वरधन विचित्र तर ॥
रास रसिक सिरताज सरस सुष सदन राज सुत ।
सीस सुहावन क्रीट कलित मनि मानिक अद्भुत ॥९२॥
संतत नौमि सनेह सहित रासेस वेस घर ।
सुकुमारी सिय सहित प्रानवल्लभ विनोद कर ॥
तेहि थल सषी सजाय सौंज सेवहिं सोहावनी ।
ललित लच्छमणा चारु चारुसीला सु पावनी ॥९३॥
भद्रा भाव निकेत सुभग तिमि मानवती तिय ।
क्रस्ना सखी सरोजमुखी सोभिता प्रान प्रिय ॥
परमानंद विलास हास रसरास प्रसूती ।
निज छवि छटा छकाय रमारति मान विभूती ॥९४॥
कोउ आली करकंज स्वच्छ प्रिय पच्छ मोरछल ।
कोउ कर अति रमनीय चँवर राजत विशेष भल ॥

काचित अलि अति अमल कमल कर पान दान गहि।
सोहति कोउ सखि सरस आदरस लिये रंग रहि।।९५।।
श्री सरजू जल स्वच्छ सुभग भाजन कोउ लीन्हे।
मंगल कलस विचित्र कनक अनुपम विधि कीन्हे।।
भाजन मधुर मरंद लिये करकंज सहेली।
अधिक एक से एक छटा छवि छकीं गहेली।।९६।।
कोउ करकंज सुमंजु ध्वजा सोहत सुषमा निधि।
कोउ करकमल कलाप सरस सोभित विचित्र विधि।।
छवि निधि छत्र अजूब लिये कोउ व्यजन वामवर।
कोउ सखि सूरजमुखी विधू वदनी लीने कर।।९७।।
ललित लड़ैती लाल अमल कर कमल अनूठे।
गहे अमित अलि कंज करन नवरंग अजूठे।।
कोउ चौंसर सतरंज नर्द लीन्हे कर आली।
कोउ नाना कलकेलि कुतुक प्रिय चित्र रसाली।।९८।
असंख्यात वर वस्तु सखिन करकंज सोहावन।
अवलोकत आनंद अधिक रस निधि मन भावन।।
महा मोद सु विनोद सिंधु मज्जहिं आलीगन।
ब्रह्मानंद अमंद मंदकरि सुखहाली मन।।९९।।
युगल माधुरी मध्य लीन परिकर सु मीन सम।
प्रति पल परमानंद लहैं जहँ जात न श्रुति गम।।
या रस की लवलेस छीट छकि सुजन रसिक नित।
नहिं निरखे गुन देवलोक आवेस सहित चित।।१००।।

त्रिधा सखी सिय लाल सरस सेवा तत्पर अति।
साधन सिद्धा प्रथम अपर नित्या सिद्धा सति॥
तृतिय नवल निज भाव भरी नित्या सु साध्या।
सेवहिं संतत सखी जुगल पद सद अवाध्या॥१०१॥
नाना भाव उछाह नेह जुत रची जुगल छवि।
अति अनमोल रहस्य सनी सब सखी प्रेम फवि॥
सषी वेषवर धारि अवध सरजू सु भागिनी।
निरखहिं जुगल किसोर रूप माधुरि सु रागिनी॥१०२॥
प्रेम पयोनिधि मगन अवध सरजू विसेष करि।
लली लाल मुद माल चरित चितवहिं प्रमोद धरि॥
श्री साकेत रहस्य रसिक परिकर मन भावन।
मन मति वानी पार परम पावन प्रिय पावन॥१०३॥
जेहि रस रंग निकेत न गति तारेस भानु तिमि।
जुगल प्रभा प्रतिकास पास चहुँ कहु कहिये किमि॥
संतत सहज प्रकास न तम आभास रंच जहँ।
अर्द्ध निमिष जेहि ध्याय रसिक पहुँचे अवस्य तहँ॥१०४
रसिक ध्यान निज गम्य कोसला कामप्रदा किल।
विधि हरीस सुर निकर करहिं अरचन प्रमोद मिल॥
श्री सत्या सुचि सीम स्वामिनो सकल पुरी प्रिय।
जेहि सेवहिं वैकुंठ प्रमुख सब धाम सरस हिय॥१०५॥
गो लोकादिक लोक कला साकेत महा मुनि।
वदहिं वेदविद वेद संत सिद्धांत पार गनि॥

उभय भाव अनुकूल धाम श्री अवध अनूपम।
अपर सु थल कछु एक रीति भासत अनुरूपम ॥१०६॥
अवध निवासी जीव जिते सब राम रसिक तन।
समझहिं सुजन सु नैन निरखि येकता समुद मन ॥
धामी धाम अभेद नाम नामी समान नित।
भली भाँति चित सांति सहित लखिये विनोद वित ॥१०७॥
धाम परत्व प्रताप बिना बूझे बहकत मन।
तातें धाम प्रभाव विपुल विधि लखहिं सुजन जन ॥
तेहि थल रसिक रसेस रास रंजन राजत नित।
सर्वोपर परमेस वेस आनंद द्वन्द जित ॥१०८॥
अल्हादिनी सदैव प्राण प्यारी प्रकासिनी।
जनक राज नंदिनी वाम दिसि रस विकासिनी ॥
जुगल सु छवि नष जोति जीव परब्रह्म प्रकासक।
जुगल विभव लवलेस अमित अवतार विलासक। १०९॥
अवतारी अवतार निखिल सेवहिं पंकज पद।
विदित बात नहिं गोप बदहिं बूड़े सनेह नद ॥
चिरंजीवता धारि विपुल सद्ग्रंथ सुन्यो हम।
अवलोक्यों निज नैन अपर नहिं लह्यो राम सम ॥११०॥
श्री सीता रघुवीर धीर अंसांस ईप बहु।
प्रगटत विश्व उधार हेत पुनि लीन होत कहुं ॥
सत्य परम मम वचन विलग मानिय मत मुनिवर।
सियवल्लभ किंकर समान नाहिन कोउ सुरवर ॥१११॥

सकल ईस सिरमौर राम अवधेस एक रस ।
प्रिया समेत सुतंत्र सुजन परतंत्र प्रेमवस ॥
अज्ञ अकोविद अधम अपर कछु कुपथ बखानत ।
अनुभव पार परेस देस जड़मति नहिं जानत ॥११२॥
विधि हरीस से प्रमुख अपर मुनिगन चिर जीवहिं ॥
विविधि विभव आवेस सहित रस रहस न पीवहिं ।
श्री सीतावल्लभ सु सक्ति रति धाय ईस पद ॥
भूले भाव विहार विवस वैभव दुख निधि नद ॥११३॥
कृपा पाय श्रीराम रसिक सुचि सदन लहैं अति ।
तदपि विश्व व्यवहार नहीं बिसराय सके मति ॥
मेरो रूप अनूप विभव बहु वलित मोह निधि ।
सकल सिद्धिता भूरि समुझि सेवो पद सबविधि ॥११४॥
श्री जानकी सनेह स्वाद रस रसिक केलि कल ।
रमत अपर रस अरस जहर सम लगत खेद थल ॥
जौलौं निज ईसता भान रंचक धारत मन ।
तौलों श्री रसिकेस राम रस रमत न मुद वन ॥११५॥
ताते परम परत्व अपर समुझहिं न यथारथ ।
पगे विपुल व्योहार भार तजि प्रेम पदारथ ॥
सुघट सुवन सुचि रूप जुगल मम जानु मानु मन ।
मधुर भाव मधि सखी चारुसीला विलास वन ॥११६॥
सियवर वैभव देस मध्य हनुमान नाम कपि ।
विदित भुवन सिय राम उपासक प्रबल नहीं छपि ॥

जुगल कृपा कमनीय लेस प्रिय पाय प्रेम रस ।
रहस विवेक विचित्र लही मम मति विहार वस ॥११७॥
सिय वल्लभ जे नित्य नवल परिकर प्रमोद कर ।
सखी सखा रस रूप जुगल सेवा सनेह पर ॥
तिन समेत सिय लाल रमहिं श्री अवध मध्य नित ।
महा मधुर रस भरित चरित प्रगटावत रस वित ॥११८॥
गो लोकादिक सदन बीच वैभव विहार अति ।
तातें रसिक अनन्य पगे श्री अवध रहस निति ॥
ललित ललन माधुरी सुधा रस निधि सुधाम छकि ।
अपर रुच्छ मत तुच्छ समुझि तेहि ओर न दृग तकि॥११९॥
सियवल्लभ रस रहस अमल अनवद्य अनादी ।
वरनहिं विमल विहार रसिक नव रस प्रतिवादी ॥
सिय जीवन सच्चरित रास लवलेस अंस लहि ।
विपुल रहस मुनि भूप भविष ह्वै हैं निदेस गहि ॥१२०॥
महारास रस रास सीयवल्लभ विलास वर ।
अति अनूप रस रूप सदा सौंदर्य सुधा तर ॥
रसिकन प्रान अधार रास रस धार येक रस ।
कहत सुनत चित चैन मैन मद मथन विमल जस ॥१२१॥
विधि निषेध दुरितादि द्वेष दुर्गंध दूर करि ।
पावे अचल प्रमाद हृदै रस रहस सतत धरि ॥
रसिक मंडली माँझ सोई पदवी पर पावै ।
जुगल रूप कमनीय ताहि अंतर छकि छावै ॥१२२॥

कर्म कलंक कषाय कोट कृत मोट छोट बड़ ।
रहे रती नहिं एक सु गुन सुचि श्रवन करत तड़ ॥
पवन समान अलेप रहै संतत ताकी गति ।
सियवर रहस रसेस मध्य छाकी जाकी मति ॥१२३॥
सकल लोक मधि पूजनीय सोई सज्जन सद ।
ताकी महिमा अनिर्वाच्य रस एक सु बेहद ॥
कीट भृंग सम होत जुगल रस रूप रमत जन ।
मिटत प्रकृत तन भास होत प्रतिकास दिव्य तन ॥१२४॥
लली लाल अनुराग हेत भव सेतु रहस जस ।
सब प्रकार मुद केत प्रेत चित होत अवस वस ॥
मंद मोद कैवल्य लगत जुग रहस साज सुनि ।
त्रिविधि भाँति मन मनन करत पावत सु धाम पुनि ॥१२५
जुगल महल रस सदन लहे सो सुजन नेह नव ।
रहे न पुनि उत्साह चाह दिल दाह आह भव ॥
यह रहस्य रमनीय राज रसराज विवर्धन ।
रसिकराज सिरताज जुगल जस कुरुचि विमर्दन ॥१२६॥
महा गोप ते गोप लोपकारी कषाय कुल ।
चौप सहित नित सुनत गुनत हिय हरष समाकुल ॥
निगमागम सत सार रहस मम वदन विकासित ।
पठत परम पद प्रेम प्रीति प्रतिभा प्रतिकासित ॥१२७॥
या समान सुख आन सदन किंचित न पाइये ।
यद्यपि विविधि विचित्र चरित दिन रैन गाइये ॥

भजन भावना भाव चाव दरसक अनूप जस ।
भाविक सुमन सनेह सजत अनयास महा रस ॥१२८॥
जुगल रहस रस सुधा सिंधु मधि मज्जहिं सज्जन ।
पीवहिं सदा सनेम प्रेम नवरस मन रंजन ॥
तिनहिं छार सम जोग जज्ञ व्रत दान त्याग तप ।
लगत त संसय लेस करन लायक शुभ जस जप ॥१२९॥
सियवर रहस अगाध वाध बिन वर विनोद वन ।
अधिक एक से एक रंग अनुराग बाग घन ॥
रसिक विहंग सुरंग मधुर मकरंद लोभाने ।
रहे रहस आवेस पगे मन मधि मस्ताने ॥१३०॥
उभय लोक की आस घास नीरस सपनौ सम ।
समुझि मगन अनमोल रहस रस सागर वेगम ॥
जैति भावना भावगम्य गुन ऐन वैन वर ।
जैति वनज सम स्याम सरस अभिराम मोद घर ॥१३१॥
जयति कनक घन सजल सदस वर वमन रसनमय ।
अमल अनोपे नैन मैन मद दमन जुगल जय ॥
जयति जानकीजान जसी सिरताज राज सुत ।
जयति रसिक आनंद दैन दिनरैन सु अद्भुत ॥१३२॥
जयति किसोरी विमल वदन विधु चष चकोर सम ।
जयति अमल कलकंज सु मृदुताई कीन्हे कम ॥
मंद मधुर मुसक्यान प्रान प्रीतम प्रकास जय ।
ललित लाड़ली लाड़ करन करकंज मंजु जय ॥१३३॥

जयति जुगल जस सुधा स्वच्छ सम सरस मोद निधि।
जयति कामिनी काम कलित पूरक अनेक विधि॥
जयति स्वामिनी सीय सतत सौभाग्य सदा सुचि।
जयति सरस सुकुमार सुपद अरविंद मधुर रुचि॥१३४॥
विधि हरीस सुर निकर सतत वंदित पराग जय।
नूपुर नवल अनेक आभरन सहित सुपद जय॥
जयति नाजनी नाह प्रान प्रीतम सनेह सजि।
पावहिं परम प्रमोद जाहि परिकर संतत भजि॥१३५॥
जयति अवध रसधाम रमन रमनीय रहस थल।
जयति रसिक रस रूप निरत क्रीड़ा विलास कल॥
जयति जुगल छवि छटा घटा सम सरस सुपद सद।
जयति विनोद विहार रास रस करन सु बेहद॥१३६॥
जयति प्रमोद विचित्र विपिनि नव केलि करन नित।
जुगलअनन्य अधार प्यार वरधन रसिकन चित॥
जयति नवल अनमोल नाम निज रूप धाम जस।
जयति जानकीरमन रसिक मंडन अनन्य रस॥१३७॥
जयति सुधाकर कांति पाँति नख प्रमुख अंग छवि।
जयति सजावन सुजस सतत वरनहिं विचित्र कवि॥
जुगलअनन्यशरन सनेह सर सरस हंस जय।
जयति नेह नव अमल करन मन सतत सजन नय॥१३८
दीजै जुगलअनन्यसरन निज निरषि नेह धन।
होय रहित रुचि रूच्छ तुच्छ संसार प्यार पन॥

दंपति चरित अनूप भरित पीयूष मधुर रस।
सुनि सनेह संपन्न महा मुनिराज नेह वस॥१३९॥
भई अधिक मति अचल अमल आसय उदार छकि।
गई विविधि उत्पात घात चल चित्त रहस तकि॥
उपज्यो परम प्रमोद हृदय मुनि भूप ताहि छिन।
बार बार कपिराज चरन सरसिज वंदी तिन॥१४०॥
परमानंद प्रबोध मोहिं कीनी करुनाकर।
लीनी निज जन जानि अधिक अपनाय प्रभाकर॥
केहि विधि करों कृपाल विनय मम मति अति थोरी।
दीनी दृगन देखाय आप श्री कुवँर किशोरी॥१४१॥
अहोभाग अनुराग रहस सद सुजस सुन्यो सुचि।
तव पदकंज प्रसाद परम मुद लह्यो सहित रुचि॥
संतत कृपा कटाच्छ करत रहवी कृपाल चित।
छमा कीजिये जौन भई होवे कुछ अनुचित॥१४२॥
जुगल विहार विचित्र हृदै भल भान रहे मम।
सोइ वर विसद विसेष देहु वर देस दम व दम॥
लघु सेवक सम सदा समुझिये हृदै मोहि प्रभु।
आप समान न आन कृपासागर अभेद विभु॥१४३॥
सुनि सनेह संमिलित प्रनय प्रिय वैन महामुनि।
द्रवित हृदै आनंद नीर दृग भरे सु गुन गुनि॥
बोले वचन दयाल सरस कपिनाथ सुधाकर।
धन्य धन्य तव प्रीति रीति सब विधि उपमा घर॥१४४

जुगल रहस रमनीय पाय तव सम अधिकारी।
वरनहि रसिक विचित्र समुझि सुष सरस विहारी॥
अन अधिकारिन निकट कपट करिये रहस्य जस।
निपट पाइये प्रेम गोप कीन्हे अवस्य रस ॥१४५॥
सदा मनन मन मध्य करत रहिवी रहस्य प्रिय।
जानि सजीवन सुधा स्वाद राषिवी गोप हिय ॥
नाना विधि परितोष पोष कपिपति मुनिवर करि।
मिले सु कंठ लगाय वैन गदगद सुनीर ढरि ॥१४६॥
श्री जानकी रसज्ञ गुह्यतम रहस फुरे नित।
जुगल विहार विहीन अनत सपने न जाय चित॥
अमल अतुल आसिषा विविधि विधि दई दयानिधि।
कही जथोचित वैन महामुद ऐन सार सिधि ॥१४७॥
अति आनंद अनूप दई मोहि आप सकल विधि।
तव सत संगम पाय रहस वरनी रहस्य निधि॥
मुनिवर परम प्रसन्न सहित आश्रम छवि छाये।
हरषित हृदै असेष भाँति कपिराज सिधाये।१४८॥
मुनि नायक निज सदन सुमिरि सिय लाल रहस नव।
विह्वल दसा विदेह भई तेहि समय विगत भव॥
रूप माधुरी सिंधु मगन मुनि सुमन भयो अति।
सुधि बुधि निखिल हिराय गई राची दंपति मति।।१४९
श्री हनुमान सुजान रहस रसखान सु पथ मधि।
अति उमंग रति रंग मगन प्रीतम सनेह निधि॥

जानत नहिं पग परत धरत बेसुध कित के कित।
दंपति विमल विहार बीच उरभयो अविचल चित॥१५०
श्री कपिराज उदार अमल आश्रम निज आये।
जुगल माधुरी लीन सतत सब भाँति सोहाये॥
मुनिनायक रस रास रसिक संवाद सरस सुचि।
सुनत गुनत सब भाँति हृदय उपजत रहस्य रुचि॥१५१॥
सिय संयुत सुकुमार श्याम सुंदर प्रसन्नता।
लहैं सुजन अनयास परम रस निधि अनन्यता॥
जदपि कदंब कषाय कलित मेरो मन चंचल।
पायो परम प्रमोद रसिक सतगुरु गहि अंचल॥१५२॥
संसय रती न रही गही रसिकेस बाँह मम।
दह्यो दराज कलंक रंक मन कियो भूप सम॥
श्री जुगलप्रिया गुरु पाय छाय रह्यो हृदै जुगल जस।
अपर न चित रुचि रंच पगी मम मति उज्वल रस॥१५३
ग्रंथ विनोद विलास पाँच अध्याय सुधा सर।
कीजे सुजन समाज सतत मज्जन उछाह तर॥
श्री कामद गिरिराज निकट सियकुंड केलि थल।
विरची रहस अनादि जुगल किंकरी जुगल वल॥१५४॥
सोम स्वच्छ सुभ दिवस सुतिथि आमावस सुष निधि।
मध्य दिवाकर दिव्य भव्य उत्साह व्याह विधि॥
संवत दिग ग्रह ललित लाल लीला समेत सुचि।
विरच्यो विसद विलाश श्रवन सुनि गुनि दूनी रुचि॥१५५

रसिक अनन्य सप्रेम परम प्रीतम जस सुनि नित।
मोपर होय प्रसन्न दीजिये वर अविचल चित ॥
जुगल माधुरी रहित अपर थल जाय न मो मन।
लीन मीन सम रहे पाय प्रीतम सनेह धन ॥१५६॥
रसिक अनन्य उदार कृपा कछु पाय गाय गुन ।
छन छन छवि निधि सुछवि छटा वरस्यो समान हुन ॥
जै जै श्री सियलाल प्रान प्रीतम समीर सुत।
सुघट सुवन गुन भवन विदित त्रिजयति अद्भुत रुत॥१५७
जै जै श्री गुरु रसिक सीयवल्लभ विलास जय ।
परमानंद प्रकास हृदै दायक रसेस जय ॥
जयति अवधपुर नित्य धाम अभिराम येक रस।
जै श्री सरजू सरित भरित रस रास स्वाद जस ॥१५८॥

दोहा—जुगल विनोद विलास वर, ग्रंथ रसिक रति जोग।
जुगलानन्य सरन रचित, समन विहार वियोग ॥१॥

इति-श्रीयुगलविनोदविलासे रासरस निवासे श्री समीर सुवन
अगस्त्य संवादे हलासे श्रीयुगलकिशोर विविधि
विहारविकासे युगलानन्य सुमति प्रकाशे
पंचमोऽध्यायः संवत् १९६० ॥ ५ ॥



श्रीसर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकलाष्टकः

* श्लोकः *

श्रीमच्चन्द्रकलां सरोजसुखमान्नव्यां क्षिपन्तीं पदा,
मञ्जीर ध्वनि माधुरेण मधुरां सीतानुगां शोभनाम्।
गच्छन्ती गतिमंदयां ललितया गत्याहसन्तीङ्गजम्,
हंसस्यैव वरिष्ठ मन्दगमनन्नित्यं भजन्तीं भजे ॥ १ ॥
श्रीमच्चन्द्रकलेति नाम ललिता श्रीचन्द्रभानोः सुता,
जाताया जनकात्मजाजनिदिनात्षष्ठेऽन्हिके शोभने।
श्रीमच्चन्द्रप्रभा प्रभा भवनिधेस्संतारणायाद्भुता,
सा त्वम्मे कृपया कुरुष्व करुणां यूथेश्वरी स्वामिनी ॥ २ ॥
या श्रीचन्द्रकलानितम्ब युगले स्वीये त्रिलोकच्छविम्,
वाहन्तीं युगचक्र कान्तिदमने काञ्च्येवचालंकृते।
लौहित्येन नवाम्बरेण ललिते श्रीजानकीवल्लभाम्,
द्रक्ष्येतां सखिमण्डलेरघुपतिं संलालयन्तीङ्कदा ॥ ३ ॥
माणिक्यैः परिनद्धया रसनया संराजता वल्गुना,
मध्येनैव सुराजतीञ्जनकजां पार्श्वेस्थितां सुन्दरीम्।
श्यामां सर्वरसावलम्बनकलाभेदेषु नृत्यादिषु,
चाख्याताम्मुशतीन्नतोस्मिसततं सर्वेश्वरीस्वेश्वरीम् ॥ ४ ॥
या कण्ठे उरसा विभर्ति शुभगं हारम्मनोहारिणम्,
मुक्तावृन्दविनिर्मितञ्च त्रिवली युक्तन्तुसुद्मोदरम्।

केयूरादि युतम्मृणाल सदृशं यद्बाहु द्वन्द्वम्वरम्,
तां श्रीचन्द्रकलां नमामि महिजाकान्तेन सम्मानिताम् ॥५॥
चञ्चचन्द्र मरीचिकान्ति चपलाशोभातिगं सुन्दरम्,
जानक्या वदनं रघूत्तम मुखञ्चालोकयन्तीम्वराम्।
कस्तूरीतिलकालकावृतमुखीमीषत्स्मिताम्माननां,
वीणावादनतत्परां सुरसिकैर्वन्देऽनिशं भाविनीम् ॥ ६ ॥
हे श्रीचन्द्रकले कला सुकुशले विज्ञान ज्ञान प्रदे,
सीताराम सुभक्ति नीर निभरां कल्लोलिनीन्ताम्भजे।
मह्यन्देहि रतिम्विदेहतनयाकान्ते सकान्ते वरे,
वात्सल्यादि गुणार्णवे त्रिजगतामीशे कपीश प्रिये ॥ ७ ॥
यावच्चत्पदपंकजाश्रितरजो नैवाश्रिताः पण्डिता-
स्तावद्रामप्रियाकटाक्ष लतिका छायां लभन्तेनुकिम्।
मत्त्वैवं रसिका रसेशकुशला विद्या विवेकान्विता--
स्सेवन्ते करुणार्द्रशीलनयने त्वामेव नित्यंमुदा ॥ ८ ॥
श्रीमच्चन्द्रकलाष्टकं पठति यः श्रद्धान्वितो वाशृणो-
त्यायुष्यं सकलेष्टदं सुशरणं शृङ्गारशय्या जुषाम्।
तस्मै श्रीरघुनन्दनस्सप्रियया तुष्टः कृपासागरः,
दत्वा सर्वमनोरथम्पुनरपि मैत्रीदशा पश्यतात् ॥ ९ ॥

इति श्रीमद्युगलानन्यशरण मोदधाम लघु किंकरानुकिंकर
श्रीरामकान्ताशरण प्रणीतं श्रीचन्द्रकलाष्टकं
समाप्तम् ॥

